ओ३म्

पाक्षिक
परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५६ अंक - २३ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र दिसम्बर (प्रथम) २०१४

महर्षि दयानन्द सरस्वती

।। ओ३म् ।।
महर्षि दयानन्द सरस्वती का १३१ वां बलिदान समारोह
भव्य ऋषि मेला

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५६ **अंक** : २३
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: मार्गशीर्ष शुक्ल, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

दिसम्बर प्रथम २०१४

अनुक्रम

१. आदर्श संन्यासी - स्वामी विवेकानन्द	सम्पादकीय	०४
२. तप: स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि......	स्वामी विष्वङ्	०९
३. आर्यों का महाकुम्भ	सत्येन्द्र सिंह आर्य	१२
४. पुस्तक-समीक्षा	देवमुनि	१५
५. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	२०
६. श्री राम जन्मभूमि और बाबरी.....	विरजानन्द दैवकरणि	२४
७. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२७
८. तिलक, कण्ठी, रुद्राक्ष व मौली.....	इन्द्रजित् देव	२९
९. संस्था-समाचार		३१
१०. हनुमान की उड़ान	डॉ. बाल फोंडके	३७
११. जिज्ञासा समाधान-७६	आचार्य सोमदेव	४०
१२. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

आदर्श संन्यासी - स्वामी विवेकानन्द (२)

दिनांक २३ अक्टूबर २०१४ को रामलीला मैदान, नई दिल्ली में प्रतिवर्ष की भांति आर्यसमाज की ओर से महर्षि दयानन्द बलिदान समारोह मनाया गया। इस अवसर पर भूतपूर्व सेनाध्यक्ष वी.के. सिंह मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित थे। उन्होंने श्रद्धाञ्जलि देते हुए जिन शब्दों का प्रयोग किया वे शब्द श्रद्धाञ्जलि कम उनकी अज्ञानता के प्रतीक अधिक थे। वी.के. सिंह ने अपने भाषण में कहा- 'इस देश के महापुरुषों में पहला स्थान स्वामी विवेकानन्द का है तथा दूसरा स्थान स्वामी दयानन्द का है।' यह वाक्य वक्ता की अज्ञानता के साथ अशिष्टता का भी द्योतक है। सामान्य रूप से महापुरुषों की तुलना नहीं की जाती। विशेष रूप से जिस मञ्च पर आपको बुलाया गया है, उस मञ्च पर तुलना करने की आवश्यकता पड़े भी तो अच्छाई के पक्ष की तुलना की जाती है। छोटे-बड़े के रूप में नहीं की जाती। यदि तुलना करनी है तो फिर यथार्थ व तथ्यों की दृष्टि में तुलना करना न्याय संगत होगा।

श्री वी.के. सिंह ने जो कुछ कहा उसके लिए उन्हें दोषी नहीं ठहराया जा सकता, आने वाला व्यक्ति जो जानता है, वही कहता है। यह आयोजकों का दायित्व है कि वे देखें कि बुलाये गये व्यक्ति के विचार क्या हैं। यदि उनके विचार भिन्न भी है तो उनके भाषण के बाद उनकी उपस्थिति में शिष्ट शब्दों में उनकी बातों का उत्तर दिया जाना चाहिए, ऐसा न कर पाना संगठन के लिए लज्जाजनक है। इसी प्रसंग में स्वामी विवेकानन्द के जीवन के कुछ तथ्य वी.के. सिंह की जानकारी के लिए प्रस्तुत हैं।

- सम्पादक

पिछले अंक का शेष भाग.....

'मेरठ में वे २५९ नंबर, रामबाग में, लाल नन्दराम गुप्त की बागान कोठी में ठहरे। अफगानिस्तान के आमीर अब्दुर रहमान के किसी रिश्तेदार ने उस बार साधुओं को पुलाव खिलाने के लिए कुछ रुपये दिए थे। स्वामी जी ने उत्साहित होकर रसोई का जिम्मा अपने ऊपर ले लिया। और दिनों में भी स्वामी जी बीच-बीच में रसोई में मदद किया करते थे। स्वामी तुरीयानन्द को खिलाने के लिए वे एक दिन खुद ही बाजार गये, गोश्त खरीदा, अंडे जुगाड़ किये और कई लजीज पकवान पेश किए।' (वही पृ. ९२)

'मेरठ में स्वामी जी अपने गुरुभाइयों को जूते-सिलाई से लेकर चण्डीपाठ और साथ ही पुलाव कलिया पकाना सिखाते रहे। एक दिन उन्होंने खुद ही पुलाव पकाया। मांस का कीमा बनवाया। कुछेक सींक-कबाब भी बनाने का मन हो आया। लेकिन सींक कहीं नहीं मिली। तब स्वामी जी ने बुद्धि लगाई और सामने के पीच के पेड़ से चंद नर्म-नर्म डालियाँ तोड़ लाए और उसी में कीमा लपेट कर कबाब तैयार कर लिया। यह सब उन्होंने खुद पकाया, सबको खिलाया, मगर खुद नहीं खाया। उन्होंने कहा 'तुम सबको खिलाकर मुझे बेहद सुख मिल रहा है।' (वही पृ. ९२)

'स्वामी जी ने अमेरिका से एक होटल का विवरण भेजा ''यहाँ के होटलों के बारे में क्या कहूँ? न्यूयार्क में मैं एक ऐसे होटल में हूँ, जिसका प्रतिदिन का किराया ५००० तक है। वह भी खाना-पीना छोड़कर। ये लोग दुनिया के धनी देशों में से हैं। यहाँ रुपये ठीकरों की तरह खर्च होते हैं। होटल में मैं शायद ही कभी रुकता हूँ, ज्यादातर यहाँ के बड़े-बड़े लोगों का मेहमान होता हूँ।''

'विदेश में ग्रेंड-डिनर कैसा होता है, इसका विवरण विवेकानन्द ने खुद दिया है ''डिनर ही मुख्य भोजन होता है। अमीर हैं तो उनका रसोइया फ्रेंच होता है और चावल भी फ्रांस का। सबसे पहले थोड़ी सी नमकीन मछली या मछली के अण्डे या कोई चटनी या सब्जी। यह भूख बढ़ाने के लिए होता है। उसके बाद सूप। उसके बाद आजकल के फैशन के मुताबिक एक फल। उसके बाद मछली। उसके बाद मांस की तरी! उसके बाद थान-गोश्त का सींक कबाब! साथ कच्ची सब्जी! उसके बाद आरण्य मांस-हिरण वगैरह का मांस और बाद में मिठाई। अन्त में कुल्फी। मधुरेण समापयेत्।'' प्लेट बदलते समय कांटा चम्मच भी बदल दिये जाते हैं। खाने के बाद बिना दूध की काफी।' (वही पृ. ९५)

'एक दिन भाई महेन्द्र से विवेकानन्द ने पूछा 'क्या रे, खाया क्या?' अगले पल उन्होंने सलाह दे डाली 'रोज एक जैसा खाते-खाते मन ऊब जाता है। घर की सेविका से कहना, बीच-बीच में अण्डे का पोच या ऑमलेट बना दिया करे, तब मुंह का स्वाद बदल जाएगा।' (वही पृ. ९७)

'एक और दिन करीब डेढ़ बजे स्वामी जी ने अपने भक्त मिस्टर फॉक्स से कहा 'धत्त तेरे की'! रोज-रोज एक

जैसा उबाऊ खाना नहीं खाया जाता! चलो अपन दोनों चलकर किसी होटल में खा आते हैं।' (वही पृ. ९७)

'एक दिन शाम के खाने के लिए गोभी में मछली डालकर तरकारी पकाई गई थी। उनके साथ उनके भक्त और तेज गति के भाषण लेखक गुडविन भी थे। गुडविन ने वह सब्जी नहीं खाई। उसने स्वामी जी से पूछा 'आपने मछली क्यों खाई?' स्वामी जी ने हंसते-हंसते जवाब दिया 'अरे वह बुढ़िया सेविका मछली ले आई। अगर नहीं खाता तो इसे नाली में फेंक दिया जाता। अच्छा हुआ न मैंने उसे पेट में फेंक दिया।' (वही पृ. ९८)

'मेज पर स्वामी जी की पसन्द की सारी चीजें नजर आ रही हैं- फल, डबल अण्डों की पोच, दो टुकड़े टोस्ट, चीनी और क्रीम समेत दो कप काफी।' (वही पृ. १०३)

'पारिवारिक भ्रमण पर निकलते हुए स्वामी जी का आदिम तरीके से क्लेम या सीपी खाना। गर्म-गर्म सीपी में उंगली डालकर मांस निकालने के लिए एक खास प्रशिक्षण की जरूरत होती है। लेकिन कीड़े-मकोड़े-केंचुओं के देश से सीधे अमेरिका पहुँचकर, यह सब सीखने में स्वामी जी को जरा भी वक्त नहीं लगा।' (वही पृ. १०३)

'उसी परिवार में स्वामी जी के दोपहर-भोजन का एक संक्षिप्त विवरण- मटन (बीफ या गाय का गोश्त हरगिज नहीं) और तरह-तरह की साग-सब्जियाँ, उनके परमप्रिय हरे मटर, उस वक्त डेजर्ट के तौर पर मिठाई के बजाय फल-खासकर अंगूर।' (वही पृ. १०३)

'विवेकानन्द ही एकमात्र ऐसे भारतीय थे, जिन्होंने पाश्चात्य देशों में वेदान्त और बिरयानी को एक साथ प्रचारित करने की दूरदर्शिता और दुस्साहस दिखाया।' (वही पृ. ११०)

'इससे पहले लन्दन में भी स्वामी जी ने पुलाव-प्रसंग पर भी अपनी राय जाहिर की है। प्याज को पलाशु कहते हैं- पॅल का मतलब है मांस। प्याज को भूनकर खाया जाए, तो वह अच्छी तरह हजम नहीं होता। पेट के रोग हो जाते हैं। सिझाकर खाने से फायदेमंद होता है और मांस में जो 'कस्टिवनेस' होता है वह नष्ट हो जाते हैं।' (वही पृ. ११२)

'पुलाव पर्व का मानो कहीं कोई अन्त नहीं। पहली बार अमेरिका जाने से पहले, स्वामी जी बम्बई में थे। अचानक उनके मन में इच्छा जागी कि अपने हाथ से पुलाव पकाकर सबको खिलाया जाय। मांस, चावल, खोया खीर वगैरह, सभी प्रकार के उपादान जुटाये गये। इसके अलावा यख्नी का पानी तैयार किया जाने लगा। **स्वामी जी ने यख्नी के पानी से थोड़ा-सा मांस निकाल कर चखा। पुलाव तैयार कर लिया गया। इस बीच स्वामी जी दूसरे कमरे में जाकर ध्यान में बैठ गये।** आहार के समय सभी लोगों ने बार-बार उनसे खाने का अनुरोध किया। लेकिन उन्होंने कहा 'मेरा खाने का बिल्कुल मन नहीं है। मैं तो पकाकर तुम लोगों को खिलाना चाहता था। इसलिए १४ रुपये खर्च करके हंडिया भर पुलाव बनाया है। जाओ तुम लोग खा लो और स्वामी जी दुबारा ध्यानमग्न हो गये।' (वही पृ. ११२)

'मिर्च देखते ही स्वामी का ब्रेक फेल हो जाता।' (वही पृ. ११४)

'अमेरिका में एक बार स्वामी जी फ्रेंच रेस्तराँ में पहुँच गये। वहाँ की चिंगड़ी मछली खाने के बाद घर आकर उन्होंने खूब-खूब उल्टियाँ की। बाद में ठाकुर रामकृष्ण को याद करते हुए, उन्होंने कहा 'मेरे रंग-ढंग भी अब उस बूढ़े जैसे होते जा रहे हैं। किसी भी अपवित्र व्यक्ति का छुआ हुआ खाद्य या पानी उनका भी तन-मन ग्रहण नहीं कर पाता था।' (वही पृ. ११६)

'विद्रोही विवेकानन्द की उपस्थिति हम उनके खाद्य-अभ्यास में खोज सकते हैं और पा सकते हैं। शास्त्र में कहा गया है कि दूध और मांस का एक साथ सेवन नहीं करना चाहिए। लेकिन स्वामी जी इन सबसे लापरवाह दूध और मांस दोनों ही विपरीत आहारों के खासे अभ्यस्त हो गये थे।' (वही पृ. ११८)

'इसी तरह एक बार आईसक्रीम का मजा लेते हुए उच्छवासित होकर कहा- 'मैडम, यह तो फूड फॉर गॉड्स है। अहा सचमुच स्वर्गीयम्' (वही पृ. १२०)

'शिष्य शरच्चन्द्र की ही मिसाल लें। पूर्वी बंगाल का लड़का। स्वामी जी का आदेश था। 'गुरु को अपने हाथों से पकाकर खिलाना होगा।' मछली, सब्जी और पकाने की अन्यान्य उपयोगी सामग्रियाँ लेकर शिष्य शरच्चन्द्र करीब आठ बजे बलराम बाबू के घर में हाजिर हो गया। उसे देखते ही स्वामी जी ने निर्देश दिया, तुझे अपने देश जैसा खाना पकाना होगा। अब शिष्य ने घर के अन्दर रसोई में जाकर खाना पकाना आरम्भ किया। बीच-बीच में स्वामी जी अन्दर आकर उसका उत्साह बढ़ाने लगे। कभी उसे मजाक-मजाक में छेड़ते भी रहते- 'देखना मछली का 'जूस' (रंग) बिल्कुल बांग्लादेशी जैसा ही हो।'

'अब इसके बाद की घटना शिष्य की जुबानी ही सुनी जाए- 'भात, मूंग की दाल, कोई मछली का शोरबा, खट्टी मछली, मछली की 'सुक्तिनी' तो लगभग तैयार हो

गया। इस बीच स्वामी जी नहा-धोकर आ पहुँचे और खुद ही पत्ते में ले-ले कर खाने लगे। उनसे कई बार कहा भी गया कि अभी और भी कुछ-कुछ पकाना बाकी है, मगर उन्होंने एक न सुनी। दुलरुवा बच्चे की तरह कह उठे 'जो भी बना है फटाफट ले आ, मुझसे अब इन्तजार नहीं किया जा रहा। मारे भूख के पेट जला जा रहा है।' शिष्य कभी भी पकाने-रांधने में पटु नहीं था, लेकिन आज स्वामी जी उसके पकाने की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे। कलकत्ता के लोग मछली की सुक्तिनी के नाम पर ही हंसी-मजाक करने लगते हैं। लेकिन स्वामी जी ने वही सुक्तिनी खाकर कहा 'यह व्यञ्जन मैंने कभी नहीं खाया।' वैसे मछली का जूस जितना मिर्चदार है, इतनी मिर्चदार बाकी सब नहीं हुई।'खट्टी' मछली खाकर स्वामी जी ने कहा 'यह बिल्कुल वर्धमानी किस्म की हुई है।' अब स्वामी जी ने अपने शिष्य से बेहद महत्त्वपूर्ण बात कही, 'जो अच्छा पका नहीं सकता, वह अच्छा साधु हरगिज नहीं हो सकता।' (वही पृ. १२२)

'अपनी महासमाधि के कुछ दिनों पहले स्वामी जी ने इसी शिष्य को कैसे खुद पकाकर खिलाया था, यह जान लेना भी बेहतर होगा।' (वही पृ. १२२)

'उन दिनों स्वामी जी का कविराजी इलाज जारी था। पाँच-सात दिनों से पानी-पीना बिल्कुल बन्द था, वे सिर्फ दूध पर चल रहे थे। ये वही शख्स थे जो घण्टे-घण्टे में पाँच-सात बार पानी पीते थे। शिष्य मठ में ठाकुर को भोग लगाने के लिए एक रूई मछली ले आया। मछली काट-कूट ली जाए, तो उसका अगला हिस्सा ठाकुर के भोग के लिए निकाल कर थोड़ा-सा हिस्सा अंग्रेजी पद्धति से पकाने के लिए स्वामी जी ने खुद ही मांग लिया। आग की आँच में उनकी प्यास बढ़ जाएगी, इसलिए मठ के लोगों ने उनसे अनुरोध किया कि वे पकाने का इरादा छोड़ दें। लेकिन स्वामी जी ने उन लोगों की एक न सुनी। दूध, बर्मिसेली, दही वगैरह डालकर उन्होंने चार-पाँच तरह से मछली पका डाली। थोड़ी देर बाद स्वामी जी ने पूछा, क्यों कैसी लगी? शिष्य ने जवाब दिया 'ऐसा कभी नहीं खाया।' शिष्य ने बर्मिसेली कभी नहीं खाई थी। उसने जानना चाहा कि यह कौन सी चीज है? स्वामी जी को मजाक सूझा। उन्होंने हंसकर कहा- यह विलायती केंचुआ है। इन्हें मैं लन्दन से सुखाकर लाया हूँ।' (वही पृ. १२२-१२३)

'समय:- मार्च १८९९ स्थान बेलुड़ मठ। इस लञ्च के कुछेक दिन पहले ही बिना किसी नोटिस के सिस्टर निवेदिता को उन्होंने वेलुड़ में ही सपर खिलाया था। उस दिन का मेन्यू था- कॉफी, कोल्ड मटन, ब्रेड एण्ड बटर। स्वयं स्वामी जी ने सामने बैठकर परम स्नेह से निवेदिता को खिलाया और नाव से कलकत्ता वापस भेज दिया।'

'अगले इतवार के उस अविस्मरणीय लञ्च का धारा-विवरण वे मिस मैक्लाइड को लिखे गए एक पत्र में रख गए हैं। 'वह एक असाधारण सफलता थी। काश तुम भी वहाँ होतीं, स्वामी जी ने उस दिन अपने हाथ से खाना पकाया था, खुद ही परोसा भी था। हम दूसरी मंजिल पर एक मेज के सामने बैठे थे। सरला पूर्व की तरफ मुंह किए बैठी थी, ताकि उसे गंगा नजर आती रहे। निवेदिता ने इस लञ्च को नाम दिया था 'भौगोलिक लञ्च' क्योंकि एक ही मेज पर समूचे विश्व के पकवान जुटाये गये थे। सारे व्यञ्जन स्वामी जी ने खुद पकाये थे। खाना पकाते-पकाते ही, उन्होंने निवेदिता को एक बार तम्बाकू सजा लाने को कहा, आइए, इस अतिस्मरणीय मेन्यू का विवरण सुनाएँ-

१. अमेरिकी या यांकी-फिश चाउडर।

२. नार्वेजियन- फिश-बॉल या मछली के बड़े- 'यह व्यञ्जन मुझे मैडम अगनेशन ने सिखाया था' स्वामी जी ने मजाक-मजाक में बताया। यह मैडम कौन हैं, स्वामी जी वे क्या करती हैं? मुझे भी उनका नाम सुना-सुना लग रहा है। उत्तर मिला, 'और भी बहुत कुछ करती हैं, साथ में फिश-बॉल भी पकाती हैं।'

३. इंग्लिश या यांकी- बोर्डिंग हाउस हैश। स्वामी जी ने आश्वस्त किया कि यह ठीक तरह से पकाया गया है और इसमें प्रेक मिलाया गया है। लेकिन प्रेक? इसके बजाय हमें उसमें लौंग मिली, अहा रे! प्रेक न होने की वजह से हमें अफसोस होता।'

४. कश्मीरी- मिन्सड पाई आ ला कश्मीरा। बादाम और किशमिश समेत मांस का कीमा।

५. बंगाली- रसगुल्ला और फल। पकवान का विवरण सुनकर विस्मित होना ही चाहिए।' (वही पृ. १२६)

४ जुलाई १९०२ शुक्रवार को स्वामी जी ने क्या दोपहर का, आखरी भोजन ग्रहण किया था? अलबत खाया था। इलिश मछली, जुलाई का महीना, सामने ही गंगा नदी। इलिश मछली के अलावा अगर और कुछ पकाया गया तो दुनिया के लोग कहते- यह शख्स निहायत बेरसिक है। नितान्त रसहीन। आसन्न वियोगान्त नाटक की परिणति का आभास किसी को भी नहीं था। ४ जुलाई की सुबह। स्वामी प्रेमानन्द का विवरण पढ़ने लायक है। 'इस वर्ष

पहली बार गंगा की एक इलिश मछली खरीदी गई। उसकी कीमत को लेकर कितने ही हंसी-मजाक हुए। कमरे में एक बंगाली लड़का भी मौजूद था। स्वामी जी ने उससे कहा- 'सुना है नई-नई मछली पाकर तुम लोग उसकी पूजा करते हो, कैसे पूजा की जाती है, तू भी कर डाल।' आहार के समय बेहद तृप्ति के साथ रसदार इलिश मछली और अम्बल की भुजिया खाई। आहार के बाद उन्होंने कहा 'एकादशी व्रत करने के बाद भूख काफी बढ़ गई है। लोटा-कटोरी भी चाट-चूटकर मैंने बड़ी मुश्किल से छोड़ी।'

'उन्हें एक और चीज भी पसन्द थी- कोई मछली। शिमला स्ट्रीट की दत्त-कोठी में यह मजाक मशहूर था- कोई मच्छी दो तरह की होती है, सिख कोई और गोरखा कोई। सिख कोई लम्बी-लम्बी होती है और गोरखा कोई बौनी, लेकिन काफी दमदार।' (वही पृ. १२८)

पहली बार अमेरिका जाने के लिए बम्बई में जहाज पर सवार होने से पहले स्वामी जी का अचानक कोई मछली खाने का मन हो आया। उस समय बम्बई में कोई मछली मिलना मुश्किल था। भक्त कालीपद ने ट्रेन से आदमी भेजकर काफी मुश्किलें झेलकर विवेकानन्द को कोई मछली खिलाने का दुर्लभ सौभाग्य अर्जित किया।' (वही पृ. १२८)

'किसी-किसी भक्त के यहाँ जाकर वे खुद ही मेन्यू तय कर देते थे। कुसुम कुमारी देवी बता गई हैं, 'मेरे घर आकर उन्होंने उड़द की दाल और कोई मछली का शोरबा काफी पसन्द किया था।' (वही पृ. १२८)

स्वामी जी की पसन्द-नापसन्द के मामले में मटर की दाल और कोई मछली का दुर्दान्त प्रतियोगी है- इलिश और पोई साग। स्वामी जी की महासमाधि के काफी दिनों बाद भी एक स्नेहमयी ने अफसोस जाहिर किया 'पोई साग के साथ चिंगड़ी मछली बनती है, तो नरेन की याद आ जाती है।' (वही पृ. १२९)

'जैसे चाबी और ताला, हांडी और आहार, शिव और पार्वती की जोड़ी बनी है, उसी तरह स्वामी जी के जीवन में इलिश मछली और पोई साग की जोड़ी घर कर गई थी। कान खींचते ही जैसे सिर आगे आ जाता है। उसी तरह घर इलिश आते ही स्वामी जी पोई साग की खोज करते थे। अब सुनें, इलाहबाद के सरकारी कर्मचारी, मन्मथनाथ गंगोपाध्याय का संस्मरण।

एक बार स्वामी जी स्टीमर से गोयपालन्द जा रहे थे। एक नौका पर सवार मछेरे अपने जाल में इलिश मछली बटोर रहे थे। स्वामी जी ने अचानक कहा 'तली हुई इलिश खाने का मन हो रहा है।' स्टीमर चालक समझ गया कि स्वामी जी सभी खलासियों को इलिश मछली खिलाना चाहते हैं। नाविकों से मोलभाव करके उसने बताया, 'एक आने में एक मछली, तीन-चार मछलियां काफी होंगी।' स्वामी जी ने छूटते ही निर्देश दिया 'तब एक रुपइया की मछली खरीद ले। बड़ी-बड़ी सोलह इलिश ले ले और साथ में दो-चार फाव में।' स्टीमर एक जगह रोक दिया गया।'

स्वामी जी ने कहा 'पोई साग भी होता, तो मजा आ जाता। पोई साग और गर्म-गर्म भात। गांव करीब ही था। एक दुकान में चावल तो मिल गया। मगर वहाँ बाजार नहीं लगता था। पोई साग कहाँ से मिले? ऐसे में एक सज्जन ने बताया, 'चलिए, मेरे घर की बगिया में पोई साग लहलहा रहा है। लेकिन मेरी एक शर्त है, एक बार मुझे स्वामी जी के दर्शन कराने होंगे।' (वही पृ. १२९)

रोग सूची- (वही पृ. १५८, १८९)

'दूसरी बार विदेश-यात्रा के समय उन्होंने मानसकन्या निवेदिता से जहाज में कहा था- 'हम जैसे लोग चरम की समष्टि हैं। मैं ढेर-ढेर खा सकता हूँ और बिल्कुल खाये बिना भी रह सकता हूँ। अविराम धूम्रपान भी करता हूँ और उससे पूरी तरह विमुख भी रह सकता हूँ। इन्द्रियदमन की मुझमें इतनी क्षमता है, फिर भी इन्द्रियानुभूति में भी रहता हूँ। नचेत दमन का मूल्य कहाँ है।' (वही पृ. १६०)

'उनके शिष्य शरच्चन्द्र चक्रवर्ती पूर्वी बंगाल के प्राणी थे। स्वामी जी ने उनसे कहा था- 'सुना है पूर्वी बंगाल के गांव-देहात में बदहजमी भी एक रोग है, लोगों को इस बात का पता ही नहीं है। शिष्य ने जवाब दिया- 'जी हाँ, हमारे गाँव में बदहजमी नामक कोई रोग नहीं है। मैंने तो इस देश में आकर इस रोग का नाम सुना। देश में तो हम दोनों जून मच्छी-भात खाते हैं।'

'हाँ, हाँ, खूब खा। घास-पत्ते खा-खाकर पेट पिचके बाबा जी लोग समूचे देश में छा गये हैं। वे सब महातमोगुण सम्पन्न हैं? तमोगुण के लक्षण हैं- आलस्य, जड़ता, मोह, निद्रा, यही सब।' (वही पृ. १६४)

'हमने यह भी देखा कि उनका धूम्रपान बढ़ गया था। उसमें नया आकर्षण भी जुड़ गया, नई-नई आविष्कृत अमेरिका की आइसक्रीम.....।' (वही पृ. १८८)

'किसी भक्त ने सवाल किया 'स्वामी जी, आपकी सेहत इतनी जल्दी टूट गई, आपने पहले से कोई जतन

क्यों नहीं किया।' स्वामी जी ने जवाब दिया- 'अमेरिका में मुझे अपने शरीर का कोई होश ही नहीं था।' (वही पृ. १८८)

'दोपहर ११.३० अपने कमरे में अकेले खाने के बजाय, सबके साथ इकट्ठे दोपहर का खाना खाया- रसदार इलिश मछली, भजिया, चटनी वगैरह से भात खाया।' (वही पृ. २०५)

'शाम ५ बजे- स्वामी जी मठ में लौटे। आम के पेड़ तले, बैंच पर बैठकर उन्होंने कहा- 'आज जितना स्वस्थ मैंने काफी अर्से से महसूस नहीं किया।' तम्बाकू पीकर पाखाने गऐ। वहाँ से लौटकर उन्होंने कहा- 'आज मेरी तबियत काफी ठीक है।' उन्होंने स्वामी रामकृष्णानन्द के पिता श्री ईश्वरचन्द्र चक्रवर्ती से थोड़ी बातचीत की।'

रात ९ बजे-इतनी देर तक स्वामी जी लेटे हुए थे, अब उन्होंने बाईं करवट ली। कुछ सैकेण्ड के लिए उनका दाहिना हाथ जरा कांप गया। स्वामी जी के माथे पर पसीने की बूंदें। अब बच्चों की तरह रो पड़े।

रात ९.०२ से ९.१० बजे तक गहरी लम्बी उसांस, दो मिनट के लिए स्थिर, फिर गहरी सांस, उनका सिर हिला और माथा तकिये से नीचे लुढ़क गया। आंखें स्थिर, चेहरे पर अपूर्व ज्योति और हँसी।' (वही पृ. २०६)

इस सारे विवरण को पढ़ने के बाद यदि कोई कहता है कि स्वामी विवेकानन्द इस देश के सर्वोच्च महापुरुष थे और ऋषि दयानन्द सरस्वती दूसरे पायदान पर आते हैं तो मेरा उनसे आग्रह होगा कि वे अपने वक्तव्य में संशोधन कर लें और कहें - स्वामी विवेकानन्द इस देश के महापुरुषों में पहले पायदान पर हैं और ऋषि दयानन्द सीढ़ी के अन्तिम पायदान पर हैं तो हम बधाई देंगे। हमारे वन्दनीय तो फिर भी ऋषि दयानन्द ही होंगे क्योंकि इस इस देश के ऋषियों ने महानता का आदर्श धन, बल, सौन्दर्य, विद्वत्ता, वक्तित्व आदि को नहीं माना, उन्होंने बड़प्पन का आधार सदाचार को माना है। इसलिए मनु महाराज कहते हैं-

यह देश सच्चरित्र लोगों के कारण सारे संसार को शिक्षा देता रहा है। जैसा कि

ऐतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

टिप्पणी

पुस्तक का नाम - विवेकानन्द- जीवन के अनजाने सच
प्रकाशक - पेंग्विन प्रकाशन, नई दिल्ली

- **धर्मवीर**

गावो विश्वस्य मातरः

- वेद प्रकाश आर्य 'वेदमुनि'

स्वतन्त्र अपने देश में गौ रक्षा होती क्यों नहीं?
रिश्वत से न्याय को जब खरीदा होता नहीं।
रक्षक से भक्षक बने कैसा सितम ढ़ाया है।
लोगो ने गो माता का ऐसा मान घटाया है।
स्वार्थी नेता हो गये, गोवध देख क्यों रह गये।
दिल नहीं कमजोर कुर्सी नींद में बस सो गये।
न जगे यदि सब अभी, क्या विदेशी लूट ले जायेंगे।
वीर माँ के ऐ। सपुतो गोवध क्या देखते रह जायेंगे।
जाग जाओ है समय कर लो यह प्रण आज ही।
गौ रक्षकों के सामने, गोवधी मिटे तृण काल ही।
हे ईश ऐसी कृपा कर, वेद न घबराये कभी।
प्रकाश ऐसा दे हमें, आर्य बन जायें सभी ।
गावो मे अग्रतः सन्तु, गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे परितः सन्तु, गवां मध्ये वसाम्यहम्।।

- म.नं. ११८, चान्दपुर, मौ. साहूवान, जि. बिजनौर, उ.प्र.-२४६७२५

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः -१

- स्वामी विष्वङ्

महर्षि पतञ्जलि ने योग शास्त्र के चार विभाग किये हैं। विभाग को **'पाद'** शब्द से कथन किया है। पहला विभाग अर्थात् पाद-समाधि, दूसरा पाद साधन, तीसरा पाद विभूति और चौथा पाद कैवल्य है। पहले पाद में मुख्य रूप से समाधि को लेकर वर्णन किया है। समाधि की परिभाषा, उसके भेद आदि को लेकर विचार किया गया है। दूसरे पाद में मुख्य रूप से साधनों को लेकर वर्णन किया है। समाधि तक पहुँचने के क्या-क्या कारण होते हैं, उन कारणों का विस्तार से विचार किया है। तीसरे पाद में मुख्य रूप से विभूति (उपलब्धियों) को लेकर वर्णन किया है। समाधि तक पहुँचने के लिए जिन-जिन कारणों को अपनाया जाता है उन-उन को अपनाने से योग-साधक को अलग-अलग लाभ मिलते हैं। उन लाभों को यहाँ विभूति शब्द से कथन किया है। चौथे पाद में मुख्य रूप से कैवल्य (मोक्ष) को लेकर वर्णन किया है। योग-साधक जब समाधि लगा लेता है तब समाधि में क्या अनुभव करता है और वह अनुभव मोक्ष जैसा होता है, इत्यादि अनेक बातें कैवल्य पाद में स्पष्ट की गई हैं।

यहाँ पर दूसरे पाद यानि साधन पाद को लेकर चर्चा की जा रही है। साधन पाद में समाधि को प्राप्त कराने वाले साधनों (कारणों) की चर्चा है। समाधि साध्य है अर्थात् सिद्ध करने योग्य कार्य है- परिणाम है और साधन का अभिप्राय है समाधि को प्राप्त कराने वाले कारण। यहाँ पर कार्य कारण भाव है। जिस प्रकार से मिट्टी कारण और घड़ा कार्य है। उसीप्रकार यम, नियम आदि कारण हैं और समाधि कार्य है। यहाँ केवल अन्तर इतना है कि यम, नियम आदि कर्म के रूप में हैं और समाधि प्रत्यक्ष साक्षात्कार के रूप में है। घड़ा और मिट्टी तत्त्व (पदार्थ) हैं परन्तु यम, नियमादि तत्त्व (पदार्थ) के रूप में नहीं हैं, यह ही दोनों उदाहरणों में अन्तर है। फिर भी योग में कार्य कारण भाव को स्वीकार किया जाता है। साधन पाद में समाधि के कारणों की जो चर्चा है क्या वह चर्चा समाधि पाद में नहीं है? हाँ, यद्यपि समाधि पाद में समाधि को प्राप्त कराने वाले कुछ साधनों की चर्चा की है। जैसे विवेक-वैराग्य व अभ्यास अथवा मन को प्रसन्न करने वाले मैत्री करुणा आदि उपाय परन्तु वहाँ (समाधि पाद में) साधन पाद में बताये गये उपायों (साधनों) के समान नहीं बताया है। वहाँ पर तो विशेष योग्यता वाले साधकों को ध्यान में रखकर बताया गया है और यहाँ (साधन पाद में) सर्वसाधारण लोगों को ध्यान में रखकर विस्तार से उन साधनों की चर्चा की जा रही है जिनको अपनाकर सर्वसाधारण व्यक्ति भी समाधि तक पहुँच सकता है। इसलिए महर्षि ने इसका नाम 'साधन-पाद' रखा है।

महर्षि वेदव्यास साधन पाद की भूमिका बनाते हुए लिखते हैं- **'उद्दिष्टः समाहितचित्तस्य योगः।'** अर्थात् समाहित चित्त (एकाग्र मन वाले को समाहित चित्त कहते हैं) वाले साधकों के लिए समाधि पाद में योग का उपदेश किया है।

कथं व्युत्थितचित्तोऽपि योगयुक्तः स्यादित्येतदारभ्यते।

अर्थात् जो-जो मनुष्य चंचल स्वभाव वाला है, जो जीवन के बड़े लक्ष्य को साथ लेकर नहीं चलते हैं, जिन्होंने समाधि लगाने का स्वप्न नहीं देखा है, जिनका मन सांसारिक विषय भोगों की ओर दौड़ता रहता है, ऐसे-ऐसे लोगों को **'व्युत्थितचित्त'** कहते हैं। ऐसे चंचल मन वाले भी योग से युक्त हों, योग को समझे, समझकर योग को अपनावें। इसलिए कहा जा रहा है कि ऐसे लोग योग को कैसे अपना सके, इस बात को लेकर महर्षि पतञ्जलि ने साधन पाद की व्यवस्था की है, जिससे प्रत्येक मानव योग कर सके। महर्षि पतञ्जलि ने उन समस्त साधनों को प्रस्तुत किया है जिनको अपना कर प्रत्येक मनुष्य योग को जीवन के साथ जोड़ कर चल सकता है। ऐसा कोई साधन नहीं है जिसको महर्षि ने छोड़ दिया हो। हाँ, हमारी अज्ञानता होगी यदि हम साधन पाद के अनुसार चलकर योग को जीवन के साथ नहीं जोड़ते हैं। महर्षि वेदव्यास ने **'समाहित चित्त'** का प्रयोग किया है। समाहित चित्त का अभिप्राय एकाग्र चित्त से है। इस पर यह विचार कर देखें, तो पता चलता है कि एकाग्रता में ही समाधि लगती है या यूँ कहा जाये एकाग्र अवस्था ही तो समाधि है। फिर एकाग्र चित्त वालों के लिए विवेक-वैराग्य व अभ्यास रूपी उपायों की क्या आवश्यकता है और समाधि पाद में मन को एकाग्र करने के अलग-अलग उपाय-मैत्री करुणा आदि का कथन क्यों किया? कारण यह है कि जब मन एकाग्र ही है, तो उपायों की

अपेक्षा नहीं रहनी चाहिए परन्तु उपायों का वर्णन किया है। क्योंकि जिनका मन एकाग्र होता है, वे मैत्री करुणा आदि उपायों को नहीं अपनाते हैं। जिनको मन एकाग्र करना है, वे ही उन उपायों को अपनाते हैं।

उपरोक्त कथन से यह बात स्पष्ट होती है कि **'समाहित चित्त'** का अर्थ यद्यपि एकाग्र मन होता है परन्तु यहाँ एकाग्र मन, अर्थ न लेकर मन को एकाग्र करना जिनका लक्ष्य हो ऐसे लोगों को लेना चाहिए जिन्होंने मन को एकाग्र करना लक्ष्य बनाया है, ऐसे लोगों को ध्यान में रखते हुए समाधि पाद का वर्णन किया है। इसलिए यहाँ पर **'समाहित चित्त'** का गौण अर्थ लिया गया है। यद्यपि मुख्य अर्थ भी ले सकते हैं परन्तु मुख्य अर्थ अपवाद के रूप में ही लिया जाना चाहिए, क्योंकि एकाग्र चित्त वाले कोई-कोई विरले व्यक्ति ही होंगे (यहाँ पर एकाग्रता का अभिप्राय लौकिक एकाग्रता को न लेकर योग शास्त्रोक्त मन की चौथी अवस्था वाली एकाग्रता को लेना चाहिए, जिसमें समाधि लगती है लौकिक एकाग्रता सामान्य एकाग्रता है जिसमें योग वाली समाधि नहीं लगती है) और वे पूर्व जन्मों के पुरुषार्थ के कारण वैराग्य को शीघ्र प्राप्त होकर समाधि लगा लेते हैं। वे मैत्री करुणा आदि उपायों को नहीं अपनाते हैं परन्तु ऐसे लोग विरले ही होते हैं। इसलिए अपवाद को नियम नहीं बनाया जाता है, इस कारण **'समाहित चित्त'** शब्द से एकाग्रता को लक्ष्य बनाकर चलने वाले योगाभ्यासी का ग्रहण करना चाहिए। ऐसा अर्थ लेने पर समाधि पाद के विषय को ठीक से हृदयङ्गम कर सकेंगे और साधन पाद के साथ उचित संगति लग पायेगी। पूर्वोक्त कथन का अभिप्राय यह ही है कि जिन लोगों ने योग करने का मन बनाया है पर मन एकाग्र नहीं है इसलिए उन्होंने मन को एकाग्र करने का लक्ष्य बनाया। ऐसे लोगों को ध्यान में रखकर समाधि पाद बनाया गया है, ऐसा समझना चाहिए।

जिन लोगों ने योग करने का मन नहीं बनाया बल्कि संसार के विषय भोगों के प्रति आकर्षित होकर उन विषयों को ही अपना लक्ष्य बना कर चलते हैं। ऐसे लोगों को भी योग के प्रति आकृष्ट करना महर्षि पतञ्जलि का उद्देश्य है क्योंकि महर्षि मानव मात्र का कल्याण चाहते हैं। इसलिए उन चंचल मन वाले लोगों को ध्यान में रखते हुए साधन पाद का वर्णन किया है। इसलिए महर्षि वेदव्यास ऐसे चंचल लोगों के लिए लिखते हैं-

कथं व्युत्थितचित्तोऽपि योगयुक्तः स्यात्।

अर्थात् व्युत्थित चित्त वाले भी योग से युक्त कैसे हों? यहाँ पर व्युत्थित शब्द का अभिप्राय है चंचल। जो व्यक्ति चंचल मन वाला है अर्थात् जिसका मन एकाग्र नहीं होता। क्यों एकाग्र नहीं होता? क्योंकि उसका मन विषय भोगों की ओर आकर्षित रहता है, बार-बार विषयों को सामने लाता है और विषय भी एक समान नहीं होते हैं, इसलिए एक विषय नहीं रहता। जो-जो विषय एक से बढ़कर एक दिखता है, मन उस-उस में दौड़ता रहता है। विषय बदल-बदल करके आते हैं और उत्कृष्ट से उत्कृष्ट विषय सामने आते रहते हैं। इसलिए मन एक विषय में न लग कर अलग-अलग विषयों में डोलता रहता है। इस कारण मन चंचल बना रहता है, ऐसे चंचल मन को **'व्युत्थित चित्त'** कहा है। महर्षि पतञ्जलि ऐसे व्युत्थित चित्त वाले को भी योग में प्रवृत्त करना चाहते हैं। इसी कारण भाष्यकार महर्षि वेदव्यास लिखते हैं कि चंचल मन वाले को भी योग में प्रवेश करना चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखते हुए भूमिका में उपरोक्त बात कही गई है कि-

व्युत्थितचित्तोऽपि योगयुक्तः स्यादिति।

महर्षि वेदव्यास की उपरोक्त भूमिका से यह बात स्पष्ट होती है कि योगाभ्यास सभी को करना चाहिए। बिना योग को जीवन में उतारे कोई भी पूर्ण सुखी नहीं हो सकता इसलिए सर्वसाधारण के लिए योग शास्त्र ने साधन पाद की व्यवस्था की है। प्रश्न उपस्थित होता है कि सर्वसाधारण तो साधारण ही होता है, फिर साधारण व्यक्ति को योगाभ्यास किस प्रकार से प्रारम्भ करना चाहिए? कहाँ से प्रारम्भ करना चाहिए? इस बात का समाधान महर्षि पतञ्जलि सूत्र के रूप में कहते हैं-

तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः।

अर्थात् तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान से योगाभ्यास प्रारम्भ करना चाहिए। जब कोई भी मनुष्य अच्छे कार्यों को करते समय तप करता है, अच्छे कार्यों को करने के लिए जानकारी प्राप्त करने हेतु स्वाध्याय करता है और अच्छे कार्यों को करते हुए ईश्वर की कृपा को स्मरण रखता है तब उस व्यक्ति का तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान मानो क्रियायोग हैं। यहाँ पर तप रूपी क्रिया, स्वाध्याय रूपी क्रिया और ईश्वरप्रणिधान रूपी क्रिया को ही योग बताया जा रहा है। यद्यपि तप, स्वाध्याय व ईश्वरप्रणिधान योग के साधन हैं, फिर भी इन साधनों को योग के रूप में सूत्रकार ने कथन किया है। तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान साधन हैं अर्थात् कारण हैं, इन कारणों से योग रूपी कार्य

सिद्ध होता है। यहाँ पर कारण-कार्य भाव है। तप आदि कारण हैं और योग कार्य है। शास्त्रो में कारण को भी कार्य के रूप में कथन किया जाता है। कुछ ऐसे कारण होते हैं जिनके बिना कार्य कभी सिद्ध नहीं होता, ऐसे कारणों को कार्य के साथ जोड़ कर बोला जाता है। ऐसा लोक में भी देखा जाता है, इसलिए तप, स्वाध्याय व ईश्वरप्रणिधान को क्रियायोग कहा है।

यहाँ पर एक और बात भी समझनी चाहिए कि कुछ शब्द पारिभाषिक होते हैं। अलग-अलग शास्त्रों में अलग-अलग शब्दों का उसी-उसी शास्त्र के अनुसार अर्थ लिया जाता है। जो शब्द जिस अर्थ में जिस शास्त्र में प्रयोग में आता है वह शब्द दूसरे शास्त्र में उसी अर्थ में प्रयोग में नहीं आता है, ऐसे शब्दों को पारिभाषिक शब्द कहते हैं। उदाहरण के लिए योग शास्त्र में **'संयम'** शब्द का प्रयोग किया जाता है और संयम का अर्थ- धारणा, ध्यान व समाधि है। योग में इन तीनों अङ्गों (धारणा, ध्यान व समाधि)को मिला कर एक नाम (संज्ञा) दिया गया है- संयम। लोक में या किसी अन्य शास्त्र में संयम का अर्थ अलग है। इसी प्रकार व्याकरण शास्त्र में 'गुण' शब्द का अर्थ अलग है और आयुर्वेद में गुण शब्द का अर्थ अलग है। इस प्रकार अलग-अलग शास्त्रों में अलग-अलग पारिभाषिक शब्द होते हैं। ठीक इसी प्रकार यहाँ 'क्रियायोग' शब्द पारिभाषिक शब्द है, जिसका अर्थ- तप, स्वाध्याय व ईश्वरप्रणिधान है। योगाङ्ग- 'नियम' के इन तीनों विभागों का नाम (संज्ञा) क्रियायोग है। जब कभी योग शास्त्र में तप, स्वाध्याय व ईश्वरप्रणिधान के रूप में इन तीनों का प्रयोग करना हो, तो बार-बार तीनों का नाम न लेकर समूह का एक नाम (संज्ञा) दिया है, जिससे क्रियायोग कहने मात्र से उन तीनों का ग्रहण हो जाता है। शास्त्रों की परिपाटी में सुगमता के लिए सामूहिक नामों का प्रचलन है, जिससे सरलता से व्यवहार कर सके और कम शब्दों में कार्य बन सके।

महर्षि पतञ्जलि ने चंचल मन वालों के लिए साधन पाद का विधान किया है, जिन्होंने मन को एकाग्र करके समाधि लगाने का लक्ष्य ही नहीं बनाया। फिर भी उनको भी योग की ओर प्रवृत्त करना है, जिससे वे भी समाधि का लक्ष्य बना सके। ऐसे लोगों के लिए महर्षि ने योग को प्रारम्भ कराने के लिए तप, स्वाध्याय व ईश्वरप्रणिधान से प्रारम्भ करवाया है। प्रत्येक मनुष्य सुख चाहता है और सुख पाने के लिए कर्म करता है। बिना कर्म के मनुष्य लगातार सुख प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिए कर्म करना आवश्यक है और कर्म अच्छे भी होते हैं और बुरे भी होते हैं। यह सब जानते हैं कि अच्छे कर्म ही करने चाहिए परन्तु मनुष्य अच्छे कर्मों को करते हुए बहुत सारी बाधाओं का सामना करता है। उन बाधाओं से घबराकर अच्छे कर्मों को ही त्याग देता है परन्तु महर्षि पतञ्जलि कहते हैं कि अच्छे कर्मों को त्याग नहीं करना चाहिए। यदि अच्छे कर्म करते हुए बाधाएँ उपस्थित होती हैं, तो तप करते हुए आगे बढ़ना चाहिए न कि अच्छे कर्म त्याग करना चाहिए। इसलिए योग कराने के लिए महर्षि ने तप का ग्रहण किया है। यदि मनुष्य अच्छे कर्मों को करते हुए तप नहीं करे, तो क्या हानि हो सकती है? इस सम्बन्ध में महर्षि वेदव्यास लिखते हैं कि-

नातपस्विनो योगः सिध्यति।

अर्थात् जो व्यक्ति तप नहीं करता है, वह योग में प्रवेश नहीं कर सकता और योग को सिद्ध भी नहीं कर पायेगा। यहाँ योग का अर्थ, योग के आठ अङ्गों में से अन्तिम अङ्ग समाधि है। समाधि तक पहुँचने के लिए बहुत कुछ करना है यम से लेकर ध्यान तक योग के विभिन्न अङ्गों में से गुजरता हुआ समाधि तक पहुँचना है और समाधि तक पहुँचने के लिए तप करना अत्यन्त आवश्यक है। यदि तप नहीं करेंगे, तो समाधि को सिद्ध नहीं कर पायेंगे। इसलिए तप का ग्रहण किया है। तप ही समाधि तक पहुँचाने वाला है इसी कारण महर्षि ने कहा है अतपस्वी व्यक्ति योग को सिद्ध नहीं कर सकता।

तप किसे कहते हैं, इस सम्बन्ध में महर्षि वेदव्यास ने इसी साधनपाद के बत्तीसवें (३२) सूत्र में समझाया है कि **'तपो द्वन्द्वसहनम्'** अर्थात् द्वन्द्वों (जोड़ों) को सहन करना ही तप है। द्वन्द्व क्या है, इस सम्बन्ध में विस्तार से उसी बत्तीसवें सूत्र में चर्चा करेंगे। यहाँ पर इतना ही समझना है कि अच्छे कर्म करते हुए, जो भी बाधाएँ आ जाये, तो उनको सहन करते हुए आगे बढ़ना चाहिए कभी पीछे हटना नहीं चाहिए। यद्यपि मनुष्य बुरे कर्मों को करने के लिए प्रवृत्त होते हैं, तो उन बुरे कर्मों को रोकने वाली बहुत सारी बाधाएँ उपस्थित होती हैं परन्तु बुरा मनुष्य उन सब बाधाओं का सामना करता हुआ उन्हें सहन करता है और आगे बढ़ता है। यहाँ इस सहन करने को **'तप'** नहीं कह सकते क्योंकि 'तप' शब्द पारिभाषिक है अच्छे कर्मों को करते हुए बाधाओं को सहन करना ही तप कहलाता है बुरे कर्मों के सन्दर्भ में नहीं।

शेष भाग अगले अंक में....

आर्यों का महाकुम्भ
ऋषि मेला - अजमेर

- सत्येन्द्र सिंह आर्य

पिछले अंक का शेष भाग.....

ध्वजारोहण के पश्चात् सरस्वती भवन में तो वेदगोष्ठी आरम्भ हो गई तथा बड़े लॉन में बने मुख्य पण्डाल में भजनों का एवं वेद प्रवचनों का कार्यक्रम आरम्भ हो गया। वेद गोष्ठी में जो आलेख पढ़े गये उनका विवरण अलग से नवम्बर द्वितीय-२०१४ के अंक में संस्था समाचार में दिया गया है। मुख्य पण्डाल में कार्यक्रम श्री कुँ. भूपेन्द्रसिंह जी के भजनों से आरम्भ हुआ। एक भजन उनके सहयोगी श्री लेखराज शर्मा जी से एकेश्वरवाद की अवधारणा को सुस्पष्ट किया- "एक ब्रह्म का पूजन होवे, पूजें न जड़ दीवारों को।" प्रवचन गुरुकुल झज्जर के आचार्य श्री विजयपाल जी का हुआ। उन्होंने पंच महायज्ञों के महत्त्व एवं अपरिहार्यता पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला। दूसरे वक्ता मेरठ से पधारे श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य थे। उन्होंने वैदिक धर्म से इतर लोगों द्वारा की जाने वाली ईश्वरोपासना के पीछे जो मनोवृत्ति होती है उसकी चर्चा की। वे लोग अपने दुष्कर्मों को क्षमा करवाने के लिए ईश्वर का नाम लेते हैं, बिना पुरुषार्थ के अपनी इच्छाओं की पूर्ति की अपेक्षाएँ परमात्मा से करते हैं। दुर्गुण, दुर्व्यसन और पापरूप कुटिलता युक्त पापरूप कर्मों से बचने की भावना उनके मन में नहीं होती जबकि अथर्ववेद में स्पष्ट कहा है-

न किल्विषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः समममान एति।
अनून पात्रं निहितं न एतत् पक्तारं पक्वः पुनरा विशाति।।

परमात्मा की कर्मफल व्यवस्था में कोई त्रुटि नहीं होती, वहाँ किसी पीर, पैगम्बर, गुरु की सिफारिश दुष्कर्मों का फल भोगने से नहीं बचा सकती। कृत कर्म संचित होते जाते हैं और भोगने से ही क्षीण होते हैं। सत्र का संचालन आदरणीय आचार्य सोमदेव जी उपाध्याय ने बहुत कुशलता पूर्वक किया।

अपराह्न वाले सत्र में कार्यक्रम कुँ. भूपेन्द्र सिंह जी के भजनों से आरम्भ हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के मन्त्री श्री देशपाण्डेय जी ने वहाँ के बलिदानी वीरों का स्मरण किया। सत्र के संचालन का दायित्व प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने निभाया। हैदराबाद रियासत में निजाम के अत्याचारों पर श्री सत्येन्द्रसिंह आर्य ने प्रकाश डाला। हिन्दुओं के लिए तो रियासत काले पानी के समान थी। वे अपने मन्दिरों की, पाठशालाओं की मरम्मत नहीं करा सकते थे। नये मन्दिरों और पाठशालाओं का निर्माण नहीं कर सकते थे। अपने धर्म का प्रचार नहीं कर सकते थे, मन्दिरों में घण्टे-घड़ियाल नहीं बजा सकते थे। आर्य उपदेशकों का तो वहाँ प्रचारार्थ जाना किसी न किसी बहाने प्रायः प्रतिबन्धित ही रहता था। इस भयावह स्थिति से हिन्दुओं को बचाने के लिए ही आर्य समाज ने सन् १९३९ में हैदराबाद सत्याग्रह किया। भाई वेदप्रकाश, भाई श्यामलाल आदि वीरों का बलिदान हुआ परन्तु निजाम को झुकना पड़ा और आन्दोलन सफल हुआ। प्रो. जिज्ञासु जी वहाँ के एक-एक घटना का यथार्थ चित्रण किया। दक्षिण केसरी पं. नरेन्द्र जी ने तो अपना सारा जीवन ही उस राज्य में आर्यों की रक्षा के लिए, जाति, धर्म एवं राष्ट्र की रक्षा के लिए खपा दिया। उस युग की वे सब घटनाएँ जिज्ञासु जी के स्मृति पटल पर इस प्रकार अंकित हैं जैसे वे उन सबके प्रत्यक्षदर्शी हों।

इसी सत्र में दर्शनों के प्रकाण्ड पण्डित और छहों दर्शनों के भाष्यकार आचार्य उदयवीर जी शास्त्री की जीवनी "सतत् साधना" का विमोचन हुआ। इस अवसर पर आचार्य जी की पुत्री श्रीमती आभा, उनकी पुत्री, दामाद एवं अन्य परिवार-जन कृपापूर्वक पधारे। सभा की ओर से वे सब सादर आमन्त्रित थे। ग्रन्थ के लेखक माननीय प्रो. राजेन्द्र जी जिज्ञासु हैं। सभा कार्यकारी प्रधान माननीय डॉ. धर्मवीर जी श्रद्धेय आचार्य उदयवीर जी के साथ उनके अन्तिम वर्षों में हृदय से जुड़े रहे। माननीय डॉ. वेदपाल जी भी वेदी पर उपस्थित रहे। इतिहास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण आचार्य जी के जीवन के सभी आयामों पर तथ्यात्मक विवरण इस ग्रन्थ में प्रस्तुत किये हैं। ऐसे चित्र इस पुस्तक में दिये हैं जिनका जिज्ञासु जी को छोड़कर अन्य किसी को पता नहीं था। आचार्य जी के पूज्य पिता श्री पूर्णसिंह जी का चित्र प्राप्त करने के लिए श्री यशपालसिंह आर्य (वी-१, आदर्शनगर) मेरठ से एकाधिक बार आचार्य जी के ग्राम बनैल गए। श्री पूर्णसिंह जी ने ऋषि के दर्शन किए थे।

आचार्य उदयवीर जी ने जीवन भर कष्ट उठाकर आर्य समाज की सतत् सेवा की- इस तथ्य पर आदरणीय डॉ. धर्मवीर जी, जिज्ञासु जी, डॉ. वेदपाल जी ने प्रकाश डाला। यह ग्रन्थ चामधेड़ा (जिला महेन्द्रगढ़) हरियाणा निवासी उत्साही आर्य श्री महेन्द्रसिंह आर्य और श्री अनिल आर्य के सौजन्य से प्रकाशित हुआ है।

इसी सत्र में गुरुकुल के छात्र ब्र. रविशंकर जी एवं ब्र. वेदनिष्ठ व्याकरणाचार्य जी को छात्रवृत्ति एवं श्री लक्ष्मण जिज्ञासु जी को विश्वकीर्ति स्मृति पुरस्कार देकर सम्मानित किया। वेद कण्ठस्थीकरण , वेदोपदेश आदि कई कार्यों के लिए सभा प्रति वर्ष कई पुरस्कार देती है। इस वर्ष भी दिये गए हैं। उन सबका विवरण अलग से नवम्बर द्वितीय-२०१४ के संस्था समाचार में दिया गया है। इसी सत्र में माननीय ठाकुर विक्रम सिंह जी, श्री इन्द्रजित् देव जी एव श्री ओमप्रकाश होलीकर जी ने भी अपने विचार रखे।

रात्रिकालीन सत्र ८ बजे आरम्भ हुआ। संचालन करते हुए आचार्य सोमदेव जी ने एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात कही कि- ''जो व्यक्ति इस संसार के विषय भोगों से नहीं हिला हो, वह सारे संसार को हिला सकता है।'' ऐसा केवल एक ही व्यक्ति महाभारत काल के बाद हुआ है और वह है- स्वामी दयानन्द सरस्वती। सुयोग्य विदुषी आदरणीया बहन सूर्या जी ने उसी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि ऋषि ने हमे पहचान दी है। उस युग में ऋषि ने जो समूची धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था की दुर्दशा देखी, उसी के सुधार के लिए वेद का मार्ग सुझाया जो न्याय का, सत्य का, सदाचार का, परोपकार का मार्ग है। ऋषि ने सुधार की आवश्यकता बाल्यावस्था से ही अनुभव की। अपने गुरु श्री विरजानन्द जी से विदा लेने के पश्चात् स्वामी दयानन्द जी ने स्वयं को तैयार किया और तब कार्य क्षेत्र में उतरे। व्यवहारभानु जैसी छोटी पुस्तक में सारी नीति बता दी, रजवाड़ों को सुधारा। महिलाओं की शिक्षा के लिए बन्द द्वार खोले, गोपालन का महत्त्व बताया, घोषणापूर्वक गरज कर कहा कि आड़म्बरों से कुछ भी प्राप्त होने वाला नहीं है। सत्र में यज्ञ की वैज्ञानिकता पर श्री डॉ. सतीश जी ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

शनिवार १-११-२०१४ को प्रातः यज्ञ श्री डॉ. वागीश जी आचार्य गुरुकुल एटा के ब्रह्मत्व में आरम्भ हुआ। ३१-१-२०१४ को प्रातः श्री वागीश जी किन्ही अपरिहार्य कारणों से अजमेर नहीं पहुँच सके थे। यजमानों के आसन पर श्री कन्हैयालाल जी सपत्नीक (गुड़गाँव) श्री मनोज शारदा सपत्नीक, श्री किशनलाल जी सपत्नीक (जोधपुर) एवं श्रीमती पुष्पादेवी आर्य विराजमान थे। वेदपाठ परोपकारिणी सभा के गुरुकुल के ब्रह्मचारी श्री रामदयाल जी एवं उनके सहयोगियों ने किया। यज्ञ के उपरान्त वेद प्रवचन वैदिक वाङ्मय के प्रकाण्ड पण्डित श्री डॉ. वेदपाल जी का हुआ।

अपने उद्बोधन में माननीय डॉक्टर साहब ने कहा कि संसार में मनुष्यों की समान प्रवृत्ति है- जीवन में सफलता की कामना। सफलता सभी को प्राप्त नहीं होती है। अधिकांश को अप्राप्त ही रहती है। विचार करने की दृष्टि से हम चिन्तनधारा में स्थूल से सूक्ष्म की ओर या सूक्ष्म से स्थूल की ओर चल सकते हैं। हम प्रजा (सन्तान) की कामना करते हैं। प्रजा उत्कृष्ट रूप से उत्पन्न होती है, जिसकी उत्पत्ति विशेष हो। यह इच्छा मनुष्य मात्र की है। कुत्ता, बिल्ली, साँप आदि अपनी सन्तान को उत्तम नहीं बना सकते और न उसके लिए प्रयत्न कर सकते हैं। मनुष्य इनसे भिन्न है। मनुष्य सन्तति के जन्म-मात्र से सन्तुष्ट नहीं हो सकता। वह ऐसी सन्तान नहीं चाहता जिससे उसे भयभीत होना पड़े या जिसके कृत्यों से उसे लज्जित होना पड़े। सन्तान न होना एक ऐसी रिक्तता है जिसे मनुष्य पूर्ण करना चाहता है। दत्तक पुत्र आदि की अवधारणा इसी कारण है। परन्तु सफलता प्रजा बनाने पर ही होगी। उसके लिए संस्कार चाहिए। उसे दीर्घ जीवन वाली, समुद्र की भांति मर्यादाओं में रहने वाली सन्तान चाहिए। जो सीमाओं के साथ है वह समुद्र है, वैसे ही जो सीमाओं में रहता है, वह प्रजा है। प्रजा होने पर सफलताओं की, विकास की अपार सम्भावनाएँ हैं। पतन की स्थिति अमर्यादित होने पर आती है और तब पतन समुद्र की गहराई तक हो जाता है। सफलता के लिए दूसरी आवश्यकता है शरीर का स्वस्थ, सुडौल, निरोग और व्यवस्थित होना। शरीर की बाहरी साज सँवार से काम नहीं चालने वाला। आन्तरिक सौंदर्य आवश्यक है। मन की निर्मलता चाहिए, विवेकशील प्रकृष्ट बुद्धि चाहिए। ये सफलता के आवश्यक सोपान हैं।

पूर्वाह्न (१० से १२ बजे तक) वाले सत्र में श्री भूपेन्द्रसिंह जी एवं श्री लेखराज शर्मा जी के भजन हुए। यज्ञ के ब्रह्मा श्री वागीश जी का प्रवचन हुआ। 'मानव जीवन को कैसे सुधारें और नीरसता से बचें' इस सम्बन्ध में बड़े सरल ढंग से आचार्य जी ने अपनी बात रखी। दिल्ली

से पधारे ठाकुर विक्रमसिंह ने भी वर्तमान समय में आर्य समाज की भूमिका के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

अपराह्न २ से ५ बजे तक का सत्र का शुभारम्भ सभा द्वारा संचालित गुरुकुल के ब्रह्मचारी रामदयाल व्याकरणाचार्य के भजन से हुआ। आर्य भजनोपदेशक श्री भूपेन्द्रसिंह जी ने प्रभु भक्ति का गीत- ''वेद स्वाध्याय सत्संग करते रहो, एक दिन प्राप्त सद्ज्ञान हो जायेगा'' गाकर समा बान्ध दिया। प्रवचन के क्रम में भारतीय वायु सेना के अधिकारी श्री विजय उपाध्याय जी ने अपने विचार रखे। अपने उद्बोधन में उन्होंने विमान-निर्माण विद्या में अग्रणी श्री शिवकर बापू तलपदे को याद किया जिन्होंने १९ वीं शताब्दी के अन्त में वर्ष १८९८ में मुम्बई में चौपाटी पर सर्वप्रथम विमान उड़ाया था। विमान-विद्या सम्बन्धी अनेक ग्रन्थों की भी श्री विजय उपाध्याय जी ने जानकारी दी। दूसरे युवा कार्यकर्त्ता डॉ. मृत्युञ्जय शर्मा ने अपने ओजपूर्ण विचार रखे। संवाद एवं सम्पर्क के व्यावहारिक पक्ष की चर्चा करते हुए वे भावुक भी हो गए। इसी सत्र में सिरोही रियासत के महाराजा श्री रघुवीर सिंह जी भी उपस्थित थे। भारत वर्ष के पिछले दो तीन हजार वर्षों के इतिहास पर उन्होंने प्रकाश डाला और राजपूत राजाओं द्वारा किये गये कार्यों की चर्चा की। अपने उद्बोधन में उन्होंने सभा अधिकारियों की ओर संकेत करते हुए कहा कि ''मैं आप लोगों की सभा में प्रथम बार आया हूँ।'' ऋषि दयानन्द की चर्चा करते हुए उन्होंने स्वामी रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द को भी महान् बताया। महाराजा रघुवीर सिंह सिरोही सुपठित व्यक्ति एवं इतिहास के अच्छे जानकार हैं। उन्होंने इतिहास विषयक तथ्य विश्वास के साथ प्रस्तुत किए। उनका धन्यवाद करते हुए कार्यकारी प्रधान डॉ. धर्मवीर जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने देश को सही दिशा प्रदान की। वेद और यज्ञ के महत्त्व को सुस्थापित किया। एकेश्वरवाद को निर्विवाद बताया। पाखण्ड, अन्धविश्वास एवं कुरीतियो का खण्डन किया। रामकृष्ण परमहंस और उनके शिष्य स्वामी विवेकानन्द ने वैसा कुछ नहीं किया। इस दृष्टि से महर्षि दयानन्द की इन दोनों से कोई तुलना नहीं की जा सकती। प्रो. राजेन्द्र जी जिज्ञासु ने कहा कि सभा का गठन करके ऋषिवर ने परोपकारिणी सभा के प्रधान पद पर उदयपुर नरेश महाराजा सज्जन सिंह को सुशोभित किया था और आवश्यक प्रलेख उन्हीं को सौंपे थे। अत: सभा तो महाराजा सिरोही की ही अधिक है, हम तो ट्रस्टी के नाते उसका कार्य सम्भाले हुए हैं। उन्हें चाहिए कि वे सभा को सहयोग दें। प्रत्युत्तर में महाराजा सिरोही ने कहा कि जिज्ञासु जी की बात ठीक है, अब मैं सभा पदाधिकारियों के सम्पर्क में रहूँगा और सब प्रकार से सहयोग करूँगा।

रविवार २ नवम्बर को प्रात: ७ बजे श्री डॉ. वागीश जी आचार्य के ब्रह्मत्त्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। यजमान थे- श्री रामनारायण स्वामी सपत्नीक, श्री पुष्पेन्द्र जी सपत्नीक, श्री सतीश जी गुडगाँव एवं श्री रामनारायण जी के पौत्र दिव्यांशु और पौत्री ऋचा। प्रात:कालीन वेद प्रवचन श्री डॉ. धर्मवीर जी का था। उन्होंने यजुर्वेद के ३१ वें अध्याय के मन्त्र ''**प्रजापतिश्चरति गर्भे...**'' मन्त्र की व्याख्या करते हुए कहा कि देखना-सुनना जो क्रिया है, वह आत्मा की है। शरीर तो जड़ है, देखना-सुनना जो क्रिया है, वह आत्मा की है। शरीर तो जड़ है, देखना-सुनना आदि उसका सामर्थ्य नहीं है। सत्ता के कारण आत्मा का पता चलता है। संसार की सत्ता से ईश्वर का पता चलता है। उन्होंने इस जटिल विषय पर बहुत सरलता के साथ पूरी बात स्पष्ट की।

पूर्वाह्न एवं अपराह्न के सत्रों में भजन श्री भूपेन्द्र सिंह जी के हुए। श्री नरेन्द्र निर्मल जी आर्य कवि ने भी एक-दो गीत प्रस्तुत किए। १ नवम्बर की रात्रि वाले कार्यक्रम में हमारे गुरुकुल के विद्यार्थियों ने जन्मना जाति प्रथा पर कटाक्ष करते हुए कए लघुनाटिका का अत्युत्तम मंचन किया था। नाटिका के मनोहारी दृश्यों एवं संवादों ने सभी को प्रभावित किया। २ नवम्बर के सत्रों में गुरुकुल के कुछ छात्रों को अपने विचार रखने का समय दिया गया। सुयोग्य संचालक श्री सोमदेव जी आचार्य ने समय प्रबन्धन बड़ी कुशलता से किया। फिर भी सभी ब्रह्मचारियों को समय नहीं दिया जा सका। आर्य समाज की प्रचार प्रणाली के सम्बन्ध में जिज्ञासु जी ने अपने विचार रखते हुए श्री बहाल सिंह चौकीदार का उदाहण दिया जो रात्रि को पहरा देते समय यह कहकर आवाज लगाया करते थे कि ''पाँच हजार साल से सोने वालो, जागो।'' उनके एक इसी वाक्य ने लोगों को आर्य समाज के निकट आने की प्रेरणा दी।

रात्रि को अन्तिम सत्र में कार्यक्रम की समाप्ति से पूर्व सभा मन्त्री ओममुनि जी ने सभी आगन्तुक श्रोताओं, विद्वानों, उपदेशकों का धन्यवाद किया। व्यवस्था में सहयोग करने वाले सभी आचार्यगणों, ब्रह्मचारियों, आर्यवीरों, कार्यकत्ताओं का धन्यवाद किया। विद्युत्, माइक, जनरेटर, टैण्ट आदि

की व्यवस्था वालों का एवं पाचकों का भी धन्यवाद किया। जिस प्रभु की कृपा से यह तीन दिवसीय मेला निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हुआ, उनका भी हृदय से धन्यवाद किया। वास्तव में व्यवस्था करने वालों की सजगता के कारण किसी भी प्रकार का व्यवधान नहीं हुआ, यह अत्यन्त सन्तोष की बात है।

ऋषि मेले के प्रथम दिन ही भोजनशाला वाले भवन में लगी लिफ्ट का उद्घाटन भी माननीय श्री तपेन्द्र जी विद्यालंकार, सेवानिवृत्त मुख्य सचिव राजस्थान के करकमलों द्वारा हुआ। यज्ञ एवं मन्त्र-पाठ के साथ यह कार्य हुआ। लिफ्ट की पूरी लागत नौ लाख रुपये से कुछ अधिक राशि सभा मन्त्री श्री ओममुनि जी के सुयोग्य पुत्र श्री श्रुतिशील जी झँवर ने उपलब्ध कराई। वे मुम्बई में एक बड़े उद्योग समूह में निदेशक के पद पर हैं। सभा ने उनका धन्यवाद किया और स्मृति चिह्न देकर उन्हें सम्मानित किया। श्री श्रुतिशील जी ने कहा कि सभा अपने कार्यों का विस्तार करे और धन की चिन्ता न करे। काम होगा तो लोग स्वयमेव धन देंगे।

ऋषि मेले के कार्यक्रम में आगन्तुकों की संख्या साड़े तीन हजार रही। यज्ञशाला में, सरस्वती भवन में वेदगोष्ठी में तथा मुख्य पण्डाल में सभी जगह उपस्थिति उत्साह जनक रही। सहभागिता की दृष्टि से सभा को बड़ी सफलता मिली। नेपाल से २५ व्यक्ति, पुणे से इतने ही व्यक्ति, रोहतक से ५० व्यक्ति ऋषि मेले में आए। कर्नाटक, ओड़ीशा, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बिहार, दिल्ली, हरियाणा, अमृतसर (पंजाब) एवं उत्तराखण्ड से काफी संख्या में आर्यजन पधारे। उपस्थिति एवं कार्यक्रमों की गुणवत्ता प्रतिवर्ष उत्कृष्टता की नई ऊंचाइयों को छू रही है। सभा के अधिकारी बधाई एवं साधुवाद के पात्र हैं।

- मेरठ, उ.प्र.

पुस्तक - समीक्षा

पुस्तक का नाम - मातृशक्ति की अस्मिता पर खतरा!
कारण और बचाव।

लेखक - विश्वेन्द्रार्य

प्रकाशक - वैदिक ज्ञान-विज्ञान संस्थान, बी-४१, प्रतीक एन्क्लेव, कमलानगर, आगरा-४

मूल्य - ४/- रु.   **पृष्ठ** - १६

भारतीय संस्कृति का गौरव सृष्टि उत्पत्ति के साथ से है। वैदिक धर्म में ईश्वर के बाद मातृशक्ति के गौरव का पूर्ण स्थान रहा है। वैदिक साहित्य में इसके प्रमाण हैं। **'मातृदेवो भव'**, **'माता गुरुतरा भूमेः'**, **'स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ'** आदि से स्पष्ट है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। - मनु.

देश-राष्ट्र, समाज की महान् शक्ति नारी है। नारी को नर की खान भी कहा है। नारी शौर्य, वीरता में भी पीछे नहीं है। शंकराचार्य ने नारी को नरक का द्वार कहा है, तुलसी ने भी पशुओं की गणना में ला दिया। पाश्चात्य संस्कृति के कारण दूरदर्शन, चित्रपट पर नारी के अस्तित्व पर गहरा दाग है। मानव अपनी गरिमा को भूलकर नारी पर अत्याचार, बलात्कार, शोषण, आदि तांडव कर रहा है। प्रतिदिन समाचार पत्रों के पृष्ठों पर एक न एक घटना बलात्कार की छपती है। पढ़कर पैरों तले धरती खिसक जाती है। मनुष्य कर्त्तव्य पथ से हटकर पशुता से अधम श्रेणी में आ गया है। राजनेताओं को कठोर दण्ड का प्रावधान करना चाहिए, नारी सुरक्षित हो, इसके कारण व बचाव पर विचार आवश्यक है। हमारी बहन-बेटियों की तरह सभी नारियाँ हमारी सन्तान हैं। देश रक्षा के साथ नारी सुरक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान हो। सजग प्रहरी की भांति सभी का कर्त्तव्य है। इसी भावना से यह पुस्तिका लिखी गई है।

- देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

दिनांक : १४ से २१ जून, २०१५

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।
उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१४ से २१ जून, २०१५- **योग-साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर),**
सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

।।ओ३म्।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

कुछ तड़प-कुछ झड़प

- राजेन्द्र जिज्ञासु

ऋषि का बोल-बाला:- मैंने कॉलेज में प्रवेश पाया तो मेरे एक सिख मित्र श्री शमशेरसिंह की प्रेरणा से मैंने दर्शन विषय भी ले लिया। उन दिनों दर्शन के विद्यार्थियों को मनोविज्ञान तथा तर्कशास्त्र पढ़ाया जाता था। तब तर्कशास्त्र पर एक पश्चिमी विद्वान् की एक उत्तम लघु पुस्तिका पढ़ने को मिल गई। उसका एक विचार स्थायी रूप से मेरे हृदय पर अंकित हो गया। ''जब कोई पथिक आपसे मार्ग पूछता है तो उसे इतना बताना ही आवश्यक नहीं कि सीधे जाओ, फिर दायें को हो जाना। उसे यह भी बताना आवश्यक है कि बायें को नहीं मुड़ना। पहला चौक भी छोड़ देना'' इत्यादि।

महर्षि दयानन्द पर खण्डन करने का दोष लगाकर विष वमन करने वालों को उत्तर देते हुए मैं उपरोक्त कथन भी सुनाता रहा हूँ। इन्हीं दिनों किसी मुसलमान के ऐसे कथन का उत्तर देते हुए मैंने इसी वाक्य को दोहराते हुए कहा कि **ऋषि के खण्डन से सर्वाधिक लाभ तो इस्लाम ने उठाया।** इसके पचासों प्रमाण मैंने 'कुरान सत्यार्थप्रकाश के आलोक में' दिये हैं। एक सर्वथा नया प्रमाण मुसलमान भाइयों की सेवा में रखता हूँ। आर्य जन भी इस प्रमाण का भरपूर लाभ उठावें। ऋषि ने हिन्दू, ईसाई व मुसलमान सबको झकझोरा और कहा धर्म के नाम पर गप्पों से बचो। इसका परिणाम अच्छा निकला। एक मुस्लिम विद्वान् डॉ. गुलाम जेलानी पर महर्षि की विचारधारा का चमत्कारी प्रभाव पड़ा। आपकी एक पठनीय पुस्तक से यहाँ एक हदीस उद्धृत की जाती है, ''रोज़ा रखकर स्त्री के साथ नाभि से ऊपर और घुटनों से नीचे सम्भोग करना अर्थात् उसे स्पर्श करना, चूमना, गले लगाना तथा इन्द्रिय (लिंग) का प्रयोग करना-मुसलमानों के हाँ सर्वसम्मति से हलाल व उचित है।'' इस हदीस पर डॉ. जेलानी जी की टिप्पणी आगे दी जाती है। हमारे मुसलमान भाई हमारी ऐसी समीक्षाओं को खण्डन कहकर हमें कोसा करते थे। आगे के शब्द पं. लेखराम जी, पं. चमूपति जी, पण्डित लक्ष्मण जी के नहीं- यह शब्द डॉ. जेलानी जी के हैं। वह लिखते हैं, ''पाप तथा पाप के लिए उत्तेजना देने वालों, दोनों से बचना आवश्यक है। एक पापी दुष्ट की संगति इसलिए बुरी है कि वह पाप के लिए उत्तेजित करती है। किसी वेश्या के पास गाना सुनना इसलिये घृणित है कि वह व्यभिचार के लिए उभारता है। क्या रमज़ान में आलिङ्गन, चुम्बन, सम्भोग उत्तेजक नहीं? अपने आपको देखिये, किसी से पूछिये........ रोज़े में आलिङ्गन चुम्बन के लिए प्रेरित करना और फिर उसके परिणामों को दण्डनीय बताना न्यायसंगत नहीं।'' इसके आगे डॉ. जेलानी लिखते हैं, ''यही वह हदीस है जिसने मेरे मन में हदीसों के प्रति अरुचि या घृणा पैदा की।'' जो जोशीला मियाँ बार-बार पूछता है कि स्वामी दयानन्द ने क्या खोया और क्या पाया- वह यह टिप्पणी पढ़कर बताये कि क्या यह ऋषि दयानन्द के चिन्तन का मधुर फल नहीं? हमें तो सत्यासत्य निर्णय करने के लिए, ऐसी समीक्षायें करने के लिए आपके छुरे और गोली के स्वाद चखने पड़े और अब आप हमारी बोली, भाषा व शैली में इस्लाम की व्याख्या करने लग गये। हम आपकी गालियाँ सहकर, तलवार, कटार के वार सह कर भी ज्ञान उजाला करते रहे। हमें यह पंक्ति भूली तो नहीं:-

'बतरस अज़ तेग़े बुराने मुहम्मद'

अर्थात् मुहम्मद की काटने वाली तेज तलवार से डर। अब बताने की कृपा करें क्या डॉ. गुलाम जेलानी जी की उपरोक्त व्याख्या को हम वैदिक इस्लाम कहें अथवा इस्लाम का वैदिक रंग?

आदिवासी:- महर्षि दयानन्द भवन के कब्जाधारी के गज़ट में 'आदिवासी' शब्द की रट लगी रहती है। आर्यसमाज तथा आर्यजाति के विध्वंस के लिए इस प्रकार के प्रत्येक घातक आन्दोलन से जुड़ना उसके मिशन की पूर्ति के लिए आवश्यक है। पश्चिमी गोरे ईसाइयों के भारत में आने से पहले कभी भी किसी ने आर्यों को भारत में आये आक्रमणकारी व विदेशी न कहा और न लिखा। तुर्कों, पठानों व मुगलों के दरबारी इतिहासकारों की किसी भी पुस्तक में ऐसा नहीं लिखा गया। गोरे गये तो नेहरू ने इस अभियान को और दलबल से चलाया। 'आदिवासी' शब्द आर्य जाति को, भारत को टुकड़े-टुकड़े करने की कुचाल है। आर्यसमाज अपने भाइयों को वनवासी मानता है। हिन्दू जाति से द्वेष करने वाला ही यह विष फैलाता है। एक और पेटपंथी आर्यसमाज में डिस्कवरी ऑफ इण्डिया का गुण कीर्तन करने लगा है। आर्यो! जागो, चेतो।

करना क्या चाहिये?:- चिन्ता के दो मुख्य विषय हैं। देश में विशेष रूप से उत्तर प्रदेश में सामूहिक बलात्कार

की घटनाओं की आन्धी चल रही है। काले धन आदि की बातें राजनैतिक दल तो करते ही हैं। साधु भी सदाचार, धर्मोपदेश, सुविचार, सदव्यवहार की बजाय काले धन पर ही भाषणबाजी कर रहे हैं। निश्चय ही मुलायम सिंह ने बलात्कारियों को बच्चे मानकर जो उनकी दनुजता पर अपने विचार रखे उससे बलात्कारियों को उत्तेजना मिली है। देशभर में बलात्कार, अनाचार की सुनामी का एक कारण नग्नता, अश्लील विज्ञापन, सिनेमा के आलिंगन चुम्बन के दृश्यों का दिनरैन प्रचार है। सरलता संयम पर बल देने वाली शिक्षा को विदाई मिल चुकी है। शिक्षा संस्थाओं में पढ़ाई गौण और नाच फैशन मुख्य हो चुका है। इसकी रोकथाम के लिये कुछ करना होगा।

उसी की उपासना:- मेरे एक कृपालु कर्नल शम्सी जी लखनऊ कभी अपनी पत्नी स्वर्गीया नजमा जी के साथ कुछ साहित्य पढ़कर लौटाने आये। मिल बैठकर प्रीतिपूर्वक धर्मचर्चा आरम्भ हो गई। मान्य नजमा जी ने पं. चमूपति जी की लौह लेखनी के बल पर प्रसन्नता तथा आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा, ''आर्यसमाज और इस्लाम दोनों एकेश्वरवादी हैं, न जाने दोनों में एकता समरसता क्यों नहीं?''

मैंने कहा, आप एक अल्लाह की पूजा के साथ मज़ार पूजा, श्याम पत्थर का चुम्बन तथा अल्लाह व मनुष्य के बीच में रसूल का नाम लेना पूजा के लिए आवश्यक मानते हैं **हम उसी की ही उपासना करनी योग्य मानते हैं।** हमारा आपका टकराव यहाँ आकर होता है। सब मिलकर उसी की उपासना की लहर चलायें तो बहुत से विवाद फ़साद मिट जायें। हिन्दुओं में नदी पेड़ पूजा आदि के बढ़ते रोग के निवारण के लिए आर्यों को उसी की उपासना करनी योग्य, ओ३म्, गायत्री जप का आन्दोलन छेड़ना होगा। कुछ लोग तुलसी के पौधे बाँटने को हिन्दू संस्कृति व हिन्दू धर्म की रक्षा मानते हैं। यह अन्धविश्वास का मीठा विष है। आर्यवीर कमर कसकर आगे आयें और बढ़ें।

लीजिये जानकारी दी जाती है:- गत कुछ मास में अनेक सज्जनों ने कुछ एक से प्रश्नों के उत्तर पूछे हैं। कई एक ने कहा आर्यसमाज में कई लेखकों द्वारा वीर अजीतसिंह को निष्कासित किये जाने की तिथि की कोई जानकारी नहीं दी गई। श्री लालचन्द फ़लक के जन्म के वर्ष का भी उल्लेख नहीं मिलता। चर्चा बहुत की जाती है। यह भयङ्कर भूल है कि अजीतसिंह को लाला लाजपतराय जी के साथ उसी दिन बन्दी बनाया गया समझा जावे। लाला लाजपतराय जी को ९ मई को लाहौर में बन्दी बनाया गया जबकि वीर अजीतसिंह को २ जून १९०७ को अमृतसर में बन्दी बनाया जा सका। दोनों महापुरुषों को अलग-अलग माण्डले के दुर्ग में रखा गया। ये तथ्य एकदम प्रामाणिक हैं। कविवर लालचन्द फलक का जन्म १३ जनवरी सन् १८८७ के दिन हाफ़िजाबाद जनपद गुजरांवाला में हुआ था।

चौधरी वेदव्रत कौन थे?:- श्री धर्मेन्द्र जी 'जिज्ञासु' ने हुतात्मा भगतसिंह पर अपने ग्रन्थ में भगतसिंह आदि के अभियोग में आश्चर्यजनक शौर्य की चर्चा के प्रसंग में लिखा है कि यह विद्यादेवी पंजाब के आर्यसमाजी वेदव्रत की पत्नी थी। दोनों पर कुछ और जानकारी की माँग की गई। विद्यादेवी स्वराज्य संग्राम में ही क्षय रोग से चल बसी थीं। वह साहस की धधकती ज्वाला थीं। उनके पति आर्य स्वराज्य सभा के एक कर्णधार और आर्य गजट के सहायक सम्पादक रहे। बड़े शूरवीर, स्वतन्त्रता सेनानी थे। कारागार में सत्यार्थप्रकाश उपलब्ध करवाने के लिए आन्दोलन में विजयी रहे। वानप्रस्थी फिर संन्यासी बने। निधन मेरे पास धूरी में हुआ। हैदराबाद आदि आन्दोलनों में भी जेल गये। आपकी एक ही पुत्री थी। वह भी माता के आगे-पीछे चल बसी। लाला लाजपताय के नैशनल कॉलेज (जिसमें भगतसिंह पढ़े) के स्नातक थे। शेष फिर।

आर्यसमाज साकेत नई दिल्ली की स्मारिका:- डॉ. पूणसिंह जी डबास इस स्मारिका के सम्पादक है। डबास जी सज्जन स्वभाव, ऊँची योग्यता के अनुभवी आदरणीय पुरुष हैं। आपने यह स्मारिका भेजी। इस पर प्रतिक्रिया माँगी थी। इन दिनों भेंट हो गई तो स्मारिका पर प्रतिक्रिया माँगी। मैं प्रथम भेंट में कुछ कहना नहीं चाहता। समस्त आर्य जगत् संक्षेप से मेरी प्रतिक्रिया जान ले और स्मारिकाओं के नाम पर हो रहे अनर्थ से आर्यसमाज को बचाया जावे। हरियाणा के एक समाज की स्मारिका में उसके एक ही मालिक के बड़े-बड़े नेताओं के संग फोटो छपे पाये। आर्यसमाज के हुतात्माओं......।

साकेत की स्मारिका दिल्ली सभा के माननीय नेता श्री विनय आर्य को समर्पित है सो किसी को इस स्मारिका का कोई दोष दिखाई नहीं दिया। इसमें महर्षि दयानन्द जी का भी चित्र नहीं दिया गया। वैसे फोटो कई हैं। दिल्ली में बलिदान देने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी का भी चित्र नहीं दिया गया। अधिक क्या कहा जावे? कोई वेद मन्त्र, कोई वैदिक सूक्ति भी नहीं मिलती। रजनीश के, दलाई लामा के यत्र तत्र वचन दिये गये हैं। वेद, वैदिक धर्म, वैदिक सिद्धान्तों पर एक भी लेख नहीं। दिल्ली के कोने-कोने में

वैदिक धर्म का सन्देश देने वाले पं. रामचन्द्र जी देहलवी, स्वामी धर्मानन्द जी (दिल्ली वालों का) नाम तक नहीं। अब कहिये इस पर क्या प्रतिक्रिया दी जाती? आर्यसमाजों को आर्य धर्म के प्रचार की चिन्ता रही नहीं। नेता लोग अपना फोटो, अपना प्रचार देखकर गद्‌गद्‌ हो जाते हैं। यह प्रवृत्ति, यह सोच चिन्ताजनक है। धन की यह बर्बादी तो है ही। यह नास्तिकता के प्रचार में योगदान है। इस पाप कर्म से हम सबको बचना चाहिये। मन में दु:ख था सो व्यक्त कर दिया।

अति परिचय-अति उत्साह:- गत दिनों एक विद्वान् से भेंट हुई। आपने कहा कुछ उपाधिधारी युवकों को गत कुछ वर्षों में वेद-प्रचार और आर्यसमाज की सेवा के लिए बहुत बातें बनाते देखा है परन्तु वे आर्यसमाज को एक भी कार्यकर्ता नहीं दे सके। दो चार व्यक्तियों को आर्य नहीं बना सके। अपने घर वालों को तीर्थ यात्राओं व जड़पूजा से हटाकर गायत्री जप नहीं सिखा सके। कभी किसी ग्राम में प्रचारार्थ नहीं गये। आर्यसमाज के सामान्य प्रचारकों से जुड़ने का तो प्रश्न ही नहीं। हाँ ऐसे अति उत्साही युवक गोष्ठियों में, सम्मेलनों में तो योजनायें लेकर दहाड़ते हैं। दूरस्थ बड़े नगरों यथा काशी, कलकत्ता, मुम्बई, बैंगलूर, मैंगलूर, कोचीन, लखनऊ सब बड़े नगरों के सब लीड़रों के चलभाष नम्बर अते-पते उनके पास हैं। उनसे सम्पर्क कुछ रखते हैं। एक बार धूरी प्रेमप्रकाश जी के पास गुंजोटी महाराष्ट्र का एक ठग युवक पहुँचा। उनसे कहा, मैं दक्षिण भारत में काम करना चाहता हूँ। मुझे दक्षिण के प्रसिद्ध लोगों के पते व परिचय पत्र दो। उन्होंने उससे मेरी बात करवा दी। मैंने कहा, तू श्री धर्मवीर जी या ब्रह्ममुनि जी से मिलकर बात कर। इस बात को पाँच सात वर्ष हो गये उस व्यक्ति को मैंने कहीं देखा ही नहीं। वैदिक धर्म पर सैद्धान्तिक वार का प्रतिकार कभी किया नहीं। पुरानी पुस्तकों के नाम रटकर मैक्समूलर के जवानी के, बूढ़ापे के फोटो बनाकर रिसर्च करते हैं। हमने परतवाड़ा महाराष्ट्र के एक डॉक्टर को खींचा। एक लीडर बाबू ने उसे पाठ पढ़ाया मैं आर्यसमाज छोड़ रहा हूँ तू भी छोड़ दे। उस की कृपा से वह युवक हमसे कट गया उसे भगाने वाला बाबू अब भी इस प्रकार के कामों में मस्त-व्यस्त है। जो शान्त भाव से, लगन से, जोश से, निरन्तर सेवा करे ऐसे युवकों का निर्माण कीजिये। अति उत्साही, अति परिचय की भूख वालों से समाज को बचाओ।

एक महत्त्वपूर्ण शङ्का का समाधान:- भगवान् ने सर्प, बिच्छू, बाघ, संखिया आदि क्यों बनाये? दयालु परमात्मा की दया क्रूर भेड़िये व सर्प बिछू को बनाते समय कहाँ गई? ऐसे प्रश्न बार-बार पूछे जाते हैं। प्रश्न बहुत अच्छा तथा विचारणीय है। पूरे विश्व में बड़े-बड़े विचारक यह प्रश्न उठाते चले आ रहे हैं। इस प्रश्न का उत्तर केवल वैदिक धर्म को मानने वाले आर्यसमाज के पास हैं। आर्य लोगों को ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर अपना दार्शनिक दृष्टिकोण जन-जन तक पहुँचाना चाहिये। इस लेखक ने गंगा ज्ञान सागर, बहिनों की बातें, पं. रामचन्द्र जी देहलवी और उनका दर्शन आदि अपने साहित्य में बहुत भली प्रकार से दिया है।

इस सृष्टि में प्रभु ने कुछ भी निष्प्रयोजन नहीं बनाया। मत पन्थों की यह सोच भ्रामक है कि यह जगत् मनुष्य के लिए ही है। वैदिक धर्म की मान्यता है कि सृष्टि की रचना जीव मात्र के कल्याण के लिए है। मनुष्य के अतिरिक्त और भी अनेक योनियाँ हैं। सृष्टि में विष-संखिया भी कल्याणकार है। असाध्य रोगों की औषधि संखिया से भी बनाई जाती है। यह भाषणकर्ता नहीं जानते। वैद्य-डॉक्टर जानते हैं। राजधानी में, मन्दिरों में, अस्पतालों, विद्यालयों में कूड़ादान रखे मिलेंगे। कूड़ा कचरा गन्दगी है परन्तु कूड़ादान तो स्वच्छता के सूचक हैं। पं. रामचन्द्र देहलवी जी **सर्प, बिछू को विष के कूड़ादान** कहा करते थे। वायुमण्डल में व्याप्त विष हानिकारक घातक है। सर्प, बिछू, कीड़ों, मकोड़ों, घड़याल, मगरमच्छ के लाभ अब पर्यावरण विशेषज्ञों से पूछिये। कछवे, मगरमच्छ घटने से सागर भी विषैले व घातक हो रहे हैं। मांसाहारी जातियाँ मगरमच्छों, घड़ियालों, कछवों की संख्या बढ़ाने में लगी हैं।

इंग्लैण्ड में बाघ, सिंह आदि नहीं होते परन्तु इंग्लैण्ड भी विश्व के हिंसक प्राणी सिंह के अस्तित्व की रक्षा व उसके संवर्द्धन के लिये सिंह परिषद् (Lion Club) का एक महत्त्वपूर्ण सदस्य है। क्रूर सिंह की रक्षा की चिन्ता अब क्यों? गोकरुणानिधि में महर्षि दयानन्द जी ने जीव जन्तुओं व पेड़ों की रक्षा के लिए जो विज्ञान दिया अब पूरा विश्व उसे स्वीकार करने पर विवश है। वैदिक धर्म के निन्दक भी वेद के सिद्धान्त की शरण में आ रहे हैं। **गन्ने को कोसते हुए ये लोग गुड़ का स्वाद** चख रहे हैं। आर्यसमाज में एक नया वर्ग दिखाई देने लगा है। ये लोग देहलवी जी, दर्शनानन्द जी, पं. लेखराम जी तथा उपाध्याय जी के तर्क प्रमाण ले कर उनका नाम लेते हुए बचते हैं। अमेरिका यूरोप के लेखकों को गौरव से उद्धृत करते हैं। यह तो झूठन चाटने पर इतराने जैसी बात मानी जायेगी।

- वेद सदन अबोहर, पंजाब-१५२११६

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के उपनिषद् प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

श्री राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद

– विरजानन्द दैवकरणि

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी त्रेतायुग में उत्पन्न हुये थे जिन्हें कम से कम आठ लाख सत्तर हजार वर्ष हुए हैं, इतने वर्षों से ये महापुरुष भारतीय जनमानस के हृदय की आस्था के केन्द्र बने हुए हैं। इनसे सम्बद्ध किसी भी विषय पर जब कोई निराधार चोट करता है तो उनके श्रद्धालुओं को पीड़ा होनी स्वाभाविक ही है। उन पीड़ाओं में एक है उनकी जन्मभूमि पर बने स्मारक को ध्वस्त करके उसके स्थान पर हिन्दुओं पर अत्याचार करने वाले एक क्रूर आक्रामक जहीरुद्दीन बाबर द्वारा मस्जिद का निर्माण कराया जाना। इस विषय में कुछेक ऐतिहासिक तथ्य यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

१. स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक ने राम जन्मभूमि से सम्बद्ध धारावाहिक लेख लिखते हुए ६ जुलाई १९२४ को माडर्न रिव्यू के अंक में बाबर द्वारा प्रसारित एक शाही फरमान भी प्रकाशित कराया था, वह इस प्रकार था–

शाहंशाहे हिन्द मालिकुल जहां बादशाह बाबर के हुक्म से – हजरत जलालशाह के हुक्म के बमूजिब अयोध्या में राम की जन्मभूमि को मिसमार करके उसकी जगह उसी के मसाले से मस्जिद तीमार करने की इजाजत दे दी गई है। बजरिये इस हुक्मनामे के तुमको बतौर इत्तिला के आगाह किया जाता है कि हिन्दुस्तान के किसी भी गैर सूबे से कोई हिन्दू अयोध्या न जाने पावे। जिस शख्स पर यह शुब्हा हो कि यह जाना चाहता है, फौरन गिरफ्तार करके दाखिले जिन्दाकर दिया जाय। हुक्म की सख्ती से तामील हो फर्ज समझ कर। (शाहीमुहर)

इस फरमान से ज्ञात होता है कि तत्कालीन शासक यह समझता था कि राम की जन्मभूमि के स्मारक को तोड़ कर उस स्थान पर मस्जिद बना देना सरल काम नहीं है। इस फरमान का हिन्दुओं पर क्या प्रभाव हुआ, इसका विवरण उपलब्ध नहीं है।

२. किन्तु एलेक्जेण्डर सर कनिंघम की लखनऊ गजेटियर में प्रकाशित रिपोर्ट यह बतलाती है कि युद्ध करते हुए एक लाख चौंहत्तर हजार हिन्दू जब मारे जा चुके, उनकी लाशों का ढेर लग गया तब बाबर के वजीर मीरबांकी ने तोप द्वारा जन्मभूमि का मन्दिर गिराया।

३. एक दूसरे अंग्रेज लेखक हैमिल्टन ने बाराबांकी गजेटियर में लिखा है कि जलालशाह ने हिन्दुओं के खून का गारा बनाकर उस पर लाहौरी ईंटों की नींव मस्जिद बनवाने के लिए दी थी। राममन्दिर को गिराकर मस्जिद बनाने की प्रेरणा देने वाला ''तास्सुनी मुसलमान फकीर कजल अब्बास मूसा आशिकान कलन्दर साहब'' था। यह अयोध्या को मक्का का स्वरूप देना चाहता था।

४. इस के लिए बाबर ने बाबरनामे में लिखा है–

हजरत कजल अब्बास मूसा आशिकान कलन्दर साहब की इजाजत से जन्मभूमि मन्दिर को मिसमार करके मैंने उसी के मसाले से उसी जगह यह मस्जिद तामीर की।

(बाबरनामा पृष्ठ १७३)

५. इतना होने पर भी हिन्दू शान्त नहीं बैठे। बाबर के पुत्र नसीरुद्दीन हुमायूँ के समय अयोध्या के पास स्थित सराय सिरसिण्डा और राजेपुर नामक ग्राम के सूर्यवंशीय क्षत्रियों ने दस हजार की संख्या मे एकत्र होकर जन्मभूमि की रक्षार्थ धावा बोल दिया। वहाँ स्थित सारी शाही छावनियाँ काट डाली, तम्बू फूंक दिये और मस्जिद का अगला द्वार तोड़ दिया। किन्तु तीसरे ही दिन शाही सेना आ गई, सब क्षत्रिय युद्ध करते हुए मारे गये उनके गाँवो में आग लगा दी गई।

६. हुमायूँ के पुत्र जलालुद्दीन अकबर के राज्यकाल में इन्हीं क्षत्रियों ने फिर संगठित होकर जन्म भूमि प्राप्ति हेतु आक्रमण किया, परन्तु शाही सेना सावधान थी। बड़ी भयंकर मारकाट हुई। हिन्दुओं ने भयंकर मार से शाही सेना के पांव उखाड़कर मस्जिद के सामने एक चबूतरा बना लिया था। जब यह समाचार अकबर के पास पहुँचा तो राजा बीरबल और टोडरमल ने अकबर को बहुत समझाया। अकबर ने उसी चबूतरे पर भगवान् राम की प्रतिमा स्थापित करने की आज्ञा दे दी। दीवाने अकबरी में लिखा है–

जन्मभूमि को वापिस लेने के लिए हिन्दुओं ने २० हमले किये। अपनी हिन्दू रियाया की दिल शिकमी न हो इसलिये शाहंशाहे हिन्दशाह जलालुद्दीन अकबर ने राजा बीरबल ओर टोडरमल की राय से उनको बाबरी मस्जिद के सामने चबूतरा बनाकर उस पर एक छोटा-सा राममन्दिर तामीर कर लेने की इजाजत बख्श दी और यह हुक्म दिया कि कोई शख्स उनके पूजा पाठ में किसी तरह की रोक-टोक न करे।

अकबर के पुत्र नूरुद्दीन जहांगीर और जहांगीर के पुत्र शाहबुद्दीन शाहजहाँ के समय तक उक्त व्यवस्था इसी प्रकार शान्तिपूर्वक चलती रही।

७. शाहजहाँ का पुत्र महीयुद्दीन आलमगीर औरंगजेब था। यह बादशाह हिन्दुओं से द्वेष रखने वाला क्रूर शासक था, यह इतिहास प्रसिद्ध है। राजगद्दी पर बैठते ही इसका ध्यान अयोध्या की ओर गया और अपने सिपहसालार जांबाज खाँ के नेतृत्व में एक सेना अयोध्या भेज दी। मन्दिर के रक्षकों के पास यह सूचना पहले ही पहुँच चुकी थी, अत: मूर्ति और पूजा का सामान छिपा दिया और रातों-रात निकटवर्ती ग्रामों में घूमकर मन्दिर पर आक्रमण होने की सूचना दे दी। इस कारण हिन्दुओं का एक जबरदस्त दल मन्दिर की रक्षार्थ जन्मभूमि पर आ डटा।

उन दिनों अयोध्या के अहिल्याघाट पर परशुराम मठ में समर्थ गुरु रामदास के शिष्य वैष्णवदास निवास करते थे। इनके साथ दस हजार चिमटाधारी साधुओं का एक गिरोह था। जब इन्हें रामजन्मभूमि पर आक्रमण की सूचना मिली तो ये साधु ही हिन्दुओं के दल के साथ मिल गये। इस सम्मिलित दल ने उर्वशीकुण्ड पर मुगल सेना का डटकर सामना किया। सात दिन तक घोर संग्राम होता रहा, इन वीरों की मार से शाही सेना मैदान छोड़कर भाग गई।

८. जब शाही सेना की पराजय का समाचार औरंगजेब के पास पहुँचा तो वह अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और जांबाज खाँ को पदच्युत करके सिपहसालार सैयद हसन अली को पचास हजार सैनिक देकर रामजन्मभूमि को तहस-नहस कर डालने के लिए भेजा। साधुओं का दल भी सावधान था। वैष्णवदास ने गुरु गोविन्द सिंह के पास सहायतार्थ सूचना भेजी। सूचना पाकर सिक्खों की जबरदस्त सेना लेकर गुरु गोविन्दसिंह जी ने ब्रह्मकुण्ड पर अपना अड्डा जमा लिया। युद्ध की सफलता हेतु इन लोगों ने अपनी सेना के तीन विभाग कर दिये।

सिक्खों का एक दल तोपखाने सहित फैजाबाद के शहादतगंज क्षेत्र के खेतों में छिप गया। दूसरे दल ने जो गृहस्थ क्षत्रियों का था, उसने रूदौली में शाहीसेना का प्रतिरोध किया, चिमटाधारी साधुओं का तीसरा दल जालपा के पास सरपत के जंगलों में छिपकर मुगल सेना की प्रतिक्षा करने लगा। इस प्रकार तीनों दलों ने योजनानुसार क्रमश: अलग-अलग तथा एक साथ मिलकर शाही मुगल सेना को मार भगाया। मुगल सेनापति हसन अली भी इस युद्ध में मारा गया। इस पराजय से औरंगजेब पर यह प्रभाव पड़ा कि चार वर्ष तक जन्मभूमि पर आक्रमण करने का दुस्साहस नहीं किया।

९. चार वर्ष तक शान्ति रहने से हिन्दु असावधान हो गये। फलत: सन् १६६४ में औरंगजेब ने जन्मभूमि पर पुन: आक्रमण कर दिया। शाही सेना ने दस हजार हिन्दु कत्ल किये। इनकी लाशें मन्दिर के पूर्वीय द्वार पर स्थित नवकोण के कन्दर्प कुएँ में भर दी गई और चारों ओर से दीवार बनाकर उसे घेर लिया गया। वह कन्दर्प कूप आज भी गंज शहीदों के नाम से मन्दिर के पूर्वी द्वार पर स्थित है। उसे मुसलमान अपनी सम्पत्ति बतलाते हैं। इस युद्ध में शाहीसेना ने जन्मभूमि का चबूतरा खोदकर उसे गढ़े का रूप दे दिया। हिन्दू उसी गढ़े में रामनवमी के दिन पुष्प चढ़ाते रहे।

१०. औरंगजेब के बाद लखनऊ में जब नवाबी का उदय हुआ तो नवाब सहादत अली खाँ गद्दी पर बैठा। उस समय हिन्दुओं ने पुन: जन्मभूमि प्राप्ति हेतु आक्रमण किया, परन्तु वे पराजित हो गये।

११. जब लखनऊ की गद्दी पर नवाब नासिरुद्दीन हैदर बैठा उस समय हिन्दुओं ने जन्मभूमि को प्राप्त करने के लिए पुन: आक्रमण किया। आठ दिन तक घोर युद्ध हुआ। इस युद्ध में भीटी हसवर, मकरही ख्जुरहट दियरा अमेठी के राजा गुरुदत्त सिंह आदि भी सम्मिलित थे। शाही सेना हिन्दुओं को पछाड़ती हुई हनुमान गढ़ी तक ले आई। वहाँ साधुओं की चिमटाधारी सेना ने हिन्दु वीरों की सेना के साथ मिलकर शाही सेना को मार भगाया और जन्मभूमि को अपने अधिकार में कर लिया। परन्तु यह अधिकार अधिक दिनों तक नहीं रह पाया और शाही सेना ने आकर जन्मभूमि फिर छीन ली।

१२. नवाब वाजिद अलीशाह के समय में हिन्दुओं ने जन्मभूमि के उद्धारार्थ पुन: आक्रमण किया। इस आक्रमण में अवध के दो-चार राजाओं को छोड़कर सभी हिन्दु राजा सम्मिलित थे। इस युद्ध के विषय में कनिंघम ने फैजाबाद के गजेटियर में लिखा है- इस बार शाही सेना एक ओर खड़ी तमाशा देखती रहीं। हिन्दु और मुसलमानों को यह छूट दे दी गई कि वे आपस में लड़कर निपट लें। दो दिन तक घोर युद्ध हुआ। मुसलमान पराजित हुए। क्रुद्ध हिन्दुओं की भीड़ उनके मकान फूंकने, कबरें तोड़ने और मस्जिदों को मिसमार करने लगी। यहाँ तक कि मुसलमानों की मुर्गियों तक को भी नहीं छोड़ा। इतना होने पर भी अपनी

मर्यादावश मुस्लिम स्त्रियों और बच्चों को कोई हानि नहीं पहुँचाई। अयोध्या नगरी में प्रलय मच गया। मुसलमान अयोध्या छोड़कर भागने लगे। मुसलमानों की इस दुर्दशा को देखकर शाही सेना ने जिसमें अधिकतर अंग्रेज थे, स्थिति को काबू में किया और शहर में कर्फ्यू आर्डर लगा दिया। उस समय अयोध्या के महाराज मानसिंह ने नवाब वाजिद अलीशाह से कह सुनकर हिन्दुओं को आज्ञा दिलवाई कि वे रामजन्मभूमि पर पुन: चबूतरा बनवालें। उस चबूतरे पर खसकी टट्टियों से तीन फीट ऊंचा मन्दिर बनाकर प्रतिमा स्थापित कर दी।

१३. अंग्रेजी राज्य में दो बार रामजन्मभूमि प्राप्ति के लिए आक्रमण हुए। पहला आक्रमण १९१२ में हुआ। इस आक्रमण में बाबरी मस्जिद को कोई हानि नहीं पहुँच सकी।

१४. दूसरा आक्रमण सन् १९३४ में हुआ। इस आक्रमण में बाबरी मस्जिद तोड़फोड़ कर बरबाद कर दी गई। किन्तु फैजाबाद के डिप्टी कमीश्नर जे. पी. निकलसन ने मस्जिद पुन: बनवा दी । बाबरी मस्जिद पर एक स्थान पर लिखा था– २७ मार्च १९३४ मुताबिक ११ जीउल हिज्जा सन् १३५२ हिजरी बरोजे बलवा हिन्दु बलवाई मस्जिद शहीद करके असली कुतवए उठा ले गये, जिसको तहव्वर खाँ ठेकेदार ने निहायत खूबी के साथ तीमार किया।

१५. सन् १९९२ के ६ दिसम्बर को बाबरी मस्जिद पर जो हुआ उससे प्राय: सभी लोग परिचित हैं। इस प्रकार रामजन्म भूमि हेतु अभी तक ७७ आक्रमण हो चुके हैं। जैसे–बाबर के समय में ४, हुमांयू के समय १० अकबर के समय २०, औरंगजेब के समय ३०, शहादत अली के समय ५, नासिरुद्दीन हैदर के समय ३, वाजिद अली के समय २, अंग्रेजों के समय २, नरसिंहराव के समय १, भारतीय जनता को सन्तोष उस दिन होगा जब काशी, मथुरा और अयोध्या आदि हजारों स्थानों से मुस्लिम आक्रान्ताओं के चिह्न सर्वथा धूलीसात कर दिये जायेंगे। जिनकी मूलवस्तु है उन्हें अपनी चीज प्राप्त करनी ही चाहिये। कोई चोर, डाकू किसी के पदार्थ को हथिया ले तो राजा का कर्तव्य है कि उसकी वस्तु उसे वापिस दिलाये और अपहर्त्ता को दण्डित करे। यह दण्ड व्यवस्था ही प्रजा को सुरक्षित करके शान्ति से रहने की सुविधा प्रदान कर सकती है। मनु जी ने कहा है–

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः।।

(मनु. ७.१८)

(जन्मभूमि का रक्तरंजित इतिहास के आधार पर संकलित)

- गुरुकुल झज्जर, हरियाणा

सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार

गत विश्व पुस्तक मेले में सभा द्वारा पांच हजार सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी), दो हजार सत्यार्थप्रकाश (अंग्रेजी), ऋषि दयानन्द की जीवनी पाँच हजार, दो हजार सी.डी. का नि:शुल्क वितरण किया। जिसकी सज्जनों द्वारा बहुत प्रशंसा की गई। अब सज्जनों का फिर उसी प्रकार के कार्यक्रम की मांग कर रहे हैं।

इस बार सभा ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सत्यार्थप्रकाश को चार भाषाओं में वितरित करने की योजना बनाई है, क्रमश: हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू का सत्यार्थप्रकाश प्रकाशन की प्रक्रिया में है।

ऋषि जीवनी भी अंग्रेजी, हिन्दी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जा रही है। सभी धर्मानुरागियों से निवेदन है, इस कार्य के लिए आप जितना अधिक सहयोग प्रदान करेंगे। सभा उतने ही विशाल रूप में इस कार्यक्रम को सम्पन्न करेगी। पूर्व की भाँति आपका सहयोग व समर्थन प्राप्त होगा।

सहयोग राशि निम्न क्रमांक के खातों में जमा कराई जा सकती है अथवा बैंक ड्राफ्ट, चेक द्वारा प्रेषित कर कार्यालय में जमा कराई जा सकती है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर। IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर। IFSC - SBIN0007959

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	वेद संहिताएँ– (केवल मन्त्र)	
१.	ऋग्वेद संहिता (मूल) मन्त्र– वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	रु. ५००.००
२.	"यजुर्वेद संहिता"(मूल) मन्त्र वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	१८०.००
३.	यजुर्वेद संहिता (मूल) सजिल्द (साधारण)	१००.००
४.	सामवेद संहिता (मूल) मन्त्र वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	८०.००
५.	अथर्ववेद संहिता (मूल) मन्त्र– वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	३५०.००
६.	चतुर्वेद विषय सूची	४०.००
७.	सामवेद के मन्त्रों की वर्णानुक्रमणिका	२.००
८.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सजिल्द	१००.००
९.	ऋग्वेद के प्रथम बाईस मन्त्रों का भाष्य	५.००
	वेद भाष्य–(संस्कृत एवं हिन्दी, दोनों में भाष्य)	
१०.	ऋग्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१५०.००
११.	ऋग्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१२.	ऋग्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१३.	ऋग्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
१४.	ऋग्वेदभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	२५०.००
१५.	ऋग्वेदभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	६०.००
१६.	ऋग्वेदभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१७.	ऋग्वेदभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१८.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल प्रथम भाग सजिल्द	७०.००
१९.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	६०.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
२०.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल पहला भाग सजिल्द	
२१.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल दूसरा भाग सजिल्द	
२२.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	१५०.००
२३.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द	
२४.	ऋग्वेदभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	२००.००
२५.	ऋग्वेदभाष्य दसवाँ मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	९०.००
२६.	यजुर्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
२७.	यजुर्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५०.००
२८.	यजुर्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२५०.००
२९.	यजुर्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
	वेद भाषाभाष्य – (केवल हिन्दी भाष्य)	
३०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य का नमूना	५.००
३१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
३२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	२५.००
३५.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	३०.००
३६.	ऋग्वेदभाषाभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	३०.००
३७.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३८.	ऋग्वेदभाषाभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३९.	ऋग्वेदभाषाभाष्य (नवाँ भाग) सप्तम मण्डल पहला भाग (सजिल्द)	२५.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
४०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सप्तम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	३५.००
४१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य अष्टम मण्डल (सजिल्द)	
४२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य नवम मण्डल (सजिल्द)	
४३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४५.	यजुर्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१००.००
४६.	यजुर्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३७५.००

स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्यामार्तण्ड

४७.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (पूर्वार्चिक)	
४८.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (उत्तरार्चिक) (दोनो खण्डों का सम्मिलित मूल्य)	४००.००
४९.	अथर्ववेदभाष्य – (काण्ड १ से २०) तीन भाग का एक सेट	

विविध

५०.	गोकरुणानिधि (बढ़िया)	५.००
५१.	स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश	५.००
५२.	स्वीकारपत्र	३.००
५३.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (हिन्दी)	५.००

सिद्धान्त ग्रन्थ

५४.	सत्यार्थप्रकाश (सजिल्द बढ़िया)	१२०.००
५५.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार सजिल्द)	१०.००
५६.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार अजिल्द)	७.००
५७.	आर्याभिविनय (गुटका अजिल्द)	७.००

कर्मकाण्डीय

५८.	वैदिक नित्यकर्मविधि	२५.००
५९.	पञ्चमहायज्ञविधि	१२.००
६०.	विवाह–पद्धति	२०.००
६१.	संस्कारविधि (सजिल्द)	७०.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
६२.	हवनमन्त्राः (बड़ा आकार)	५.००

पाखण्ड–खण्डन और शंका–समाधान ग्रन्थ

६३.	अनुभ्रमोच्छेदन	
६४.	भ्रमोच्छेदन (साधारण)	४.००
६५.	भ्रमोच्छेदन (बढ़िया)	१०.००
६६.	भ्रान्तिनिवारण	
६७.	शिक्षापत्रीध्वान्त–निवारण (स्वामीनारायण मतखण्डन)	२.००
६८.	वेदविरुद्धमत–खण्डन	१०.००
६९.	वेदान्तिध्वान्तनिवारण	२.००
७०.	शास्त्रार्थ काशी	८.००
७१.	शास्त्रार्थ हुगली (प्रतिमा–पूजन विचार)	६.००
७२.	सत्यधर्म विचार (मेला चान्दापुर)	७.००
७३.	शास्त्रार्थ जालंधर	३.००
७४.	शास्त्रार्थ अजमेर	३.००
७५.	शास्त्रार्थ बरेली (सत्यासत्य विवेक)	८.००
७६.	शास्त्रार्थ मसूदा	५.००
७७.	शास्त्रार्थ उदयपुर	४.००
७८.	शास्त्रार्थ फिरोजाबाद	१०.००
७९.	महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ (सजिल्द)	४०.००

शिक्षा व व्याकरण ग्रन्थ (वेदाङ्ग प्रकाश)

८०.	वर्णोच्चारण शिक्षा	१५.००
८१.	सन्धिविषय	
८२.	नामिक	
८३.	कारकीय	१०.००
८४.	सामासिक	
८५.	स्त्रैणताद्धित	
८६.	अव्ययार्थ	५.००
८७.	आख्यातिक (अजिल्द)	१५०.००

शेष भाग अगले अंक में.......

तिलक, कण्ठी, रुद्राक्ष व मौली धारण करना अशास्त्रीय

- इन्द्रजित् देव

युगल किशोर ने जब महागुरु जी से जाकर कहा- महाराज! आपने दयानन्द को विद्या देकर साँप को दूध पिलाया है। वह कण्ठी, तिलक का खण्डन करता फिरता है। यह सुनकर हृष्टमना विरजानन्द ने पूछा- 'क्या तुम सत्य कह रहे हो? तम्हें यह वृत्तान्त किसने बताया है?' युगल किशोर बोले-'और कौन बताएगा? स्वयं मेरे साथ वार्तालाप के प्रसंग में दयानन्द ने इनका खण्डन किया है।' आचार्य और उल्लसित होकर कहने लगे- 'युगल किशोर! इस शुभ संवाद को सुनाने के लिए भूरि-भूरि साधुवाद।'

यह प्रसंग आर्य समाज के यशस्वी विद्वान् लेखक स्वामी वेदानन्द सरस्वती (दयानन्द तीर्थ) द्वारा रचित पुस्तक ''सर्वविध क्रान्ति के प्रवर्त्तक महर्षि स्वामी विरजानन्द सरस्वती का जीवन चरित'' के १९८१ में प्रकाशित संस्करण के पृष्ठ १४२ पर आप देख सकते हैं। युगल किशोर गुरु विरजानन्द जी के शिष्य व महर्षि दयानन्द सरस्वती के मथुरा में अध्ययन-काल के सहपाठी थे। शेष बातें आप सहज ही समझ सकते हैं। इसी प्रकार की एक अन्य घटना डॉ. रामप्रकाश द्वारा लिखित ''गुरु विरजानन्द दण्डी-जीवन एवं दर्शन'' में पृष्ठ ७२ पर लिखी है। उसके ये शब्द भी विचारणीय हैं- ''स्वामी दयानन्द शाम के समय प्राय: संस्कृत में बातचीत करते थे। वे देर रात तक पढ़ते थे। वार्त्तालाप में वैष्णवों की कण्ठी व तिलकादि को निषिद्ध बताते थे। उनके इन विचारों को स्वामी विरजानन्द का पूर्ण समर्थन मिला।''

इन दो प्रमाणों से आप सहज ही समझ सकते हैं कि गुरु विरजानन्द व महर्षि दयानन्द कण्ठी एवं तिलक धारण करने के विरोधी थे परन्तु आर्य समाज में आज इनके विचारों के विरोधी लोग कण्ठी व तिलक को धारण करने के पक्ष में बात करते हैं। कुछ तो कण्ठी, तिलक व मौली धारण के पक्ष में अपने लेख भी लिखते हैं। ऐसे लेखक तिलकादि धारण करने के पक्ष में कोई वैदिक प्रमाण नहीं देते अपितु ''ऐसा कहा जाता है'', ''ऐसा सुना जाता है'' या ''लोगों का विचार है'' ऐसी शब्दावलि का प्रयोग करके प्रमाण देने की अपनी जिम्मेदारी से बच गये अनुभव करके पौराणिक मान्यताओं की स्थापना करने का प्रयास करते हैं।

महर्षि दयानन्द के मथुरा में अध्ययन काल के दो प्रमाण उद्‌धृत करने के उपरान्त हम महर्षि दयानन्द जी के साहित्य से भी कुछ और प्रमाण देकर तिलकादि के धारण करने सम्बन्धी महर्षि के विचारों का उल्लेख करते हैं- ''एक कथा भक्तमाल में लिखी है-कोई एक मनुष्य वृक्ष के नीचे सोता था। सोता-सोता ही मर गया। ऊपर से काक ने विष्ठा कर दी। वह ललाट पर तिलक का काम हो गई थी। वहाँ यम के दूत उसको लेने आये। इतने में विष्णु के दूत भी पहुँच गए। दोनों विवाद करते थे कि यह हमारे स्वामी की आज्ञा है। हम यमलोक में ले जांएगे। विष्णु के दूतों ने कहा- ''हमारे स्वामी की आज्ञा है, वैकुण्ठ में ले जाने की। देखो। इसके ललाट में वैष्णवी की तिलक है। तुम कैसे ले जाओगे? तब यम दूत चले गए। विष्णु के दूत सुख से वैकुण्ठ में उसे ले गए। उनको वैकुण्ठ में रखा।

देखो! जब तिलक का इतना महात्म्य है, तो जो अपनी प्रीति और हाथ से तिलक करते हैं, वे नरक से छूट वैकुण्ठ में जावे, तो इसमें क्या आश्चर्य है?

''हम पूछते हैं कि जब छोटे-से तिलक के करने से वैकुण्ठ में जावें, तो सब मुख के ऊपर लेपन करने वा काला मुख करने, पूरे शरीर पर लेपन करने से वैकुण्ठ से भी आगे सिधार जाते हैं वा नहीं? इससे ये बातें सब व्यर्थ हैं।''

- सत्यार्थप्रकाश, एकादश समुल्लास।

स.प्र. के एकादश समुल्लास में ही रुद्राक्ष-धारण के तथाकथित महत्त्व का विरोध भी पाठकों को मिल सकता है। इसी प्रकार इसी समुल्लास में चक्रांकित लोगों के विषय में महर्षि दयानन्द लिखते हैं- ''शठकोष योगी सूप को बनाकर बेचता फिरता था अर्थात् कंजर जाति में उत्पन्न हुआ था। जब उसने ब्राह्मणों से पढ़ना व सुनना चाहा होगा, तब ब्राह्मणों ने तिरस्कार किया होगा। उसने ब्राह्मणों के विरुद्ध सम्प्रदायी तिलक चक्रांकित आदि शास्त्र विरुद्ध मनमानी बातें चालाई होंगी।''

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित एक अन्य ग्रन्थ ''वेदविरुद्ध-खण्डनम्'' के आधार पर हम और प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। यह लघु ग्रन्थ संस्कृत में लिखा गया था परन्तु इसका आर्यभाषा अनुवाद भी वहीं उपलब्ध है। इसमें प्रसंग इस प्रकार है:-

''**प्रश्न** : कण्ठीतिलकधारणे मूर्तिपूजने च पुण्यं

भवत्युतापुण्यम्?

उत्तर: पुण्यं भवति, न च पापमिति ब्रूम:। स्वल्पकण्ठी-तिलकधारणे मूर्तिपूजने च पुण्यं भवति चेत् तर्हि कण्ठीधारणे चन्दनेन सर्वमुखशरीरलेपने पृथिवीपर्वतपूजने च महत्पुण्यं भवतीति मन्यतां क्रियताञ्च। तत्र वेदविधिप्रतिष्ठाया अभावान्न क्रियते इति जल्पाम:। वेदेषु तु खलु कण्ठीतिलक-धारणस्य पाषाणमूर्तिपूजनस्य च लेशमात्रोऽपि विधि: प्रतिष्ठा च न दृश्यते। अतो भवत्कथनं व्यर्थमेव।''

इसका आर्यभाषा (हिन्दी) में अनुवाद इस प्रकार दिया है:-

प्रश्न: कण्ठी तथा तिलक धारण और मूर्ति के पूजने में पुण्य होता है वा अपुण्य?

उत्तर: 'पुण्य होता है, पाप नहीं' ऐसा कहते हो, सो ठीक नहीं क्योंकि यदि थोड़े कण्ठी तथा तिलक को धारण और मूर्तिपजन में पुण्य हेता तो बहुत कण्ठियों का भार लादने से सब मुख व शरीर के लेपन करने तथा सम्पूर्ण पृथिवी और पर्वतों के पूजन में बड़ा पुण्य होता है, ऐसा मानो और करो। यदि कहो कि पृथिवी और पहाड़ के पूजने के लिए वेद में प्रतिष्ठा का विधान न होने से नहीं करते, तो वेदों में कण्ठी, तिलक धारण और पाषाण मूर्ति पूजन का लेशमात्र भी विधान नहीं और न प्रतिष्ठा का कहीं नाम है। इसलिए आपका कथन व्यर्थ है।''

'भागवत-खण्डनम्' भी महर्षि दयानन्द का एक लघु ग्रन्थ है। इसका निम्नलिखित वर्णन भी हमारे मन्तव्य का समर्थन करता है:-

ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्रा वर्णा:, ब्रह्मचारिगृहिवनि-संन्यासिन आश्रमाश्च ज्ञातव्या: एषां वेदेषु मनुस्मृतौ च धर्मा उक्ता:। एभ्यो ये विरोधिनस्ते पाषण्डिन एव। किंलक्षणास्ते? चक्राद्यङ्कनकेवलोर्ध्वपुण्ड्रकाष्ठ-मालाधारिण:। तप्तमुद्रोर्ध्वपुण्ड्रे द्वे नरकवाससाधने। तस्मात् त्याज्यमनघैर्द्विजैर्नरकभीरुभिरिति- जाबालि:-

विभूतिधारणं त्यक्त्वा त्यक्त्वा रुद्राक्षधारणम्।
मां मा पूज्य विश्वेशं शिवलिंगरूपिणम्।।

अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र- ये चार वर्ण व ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास-ये चार आश्रम जानने चाहिए। इनके धर्म वेदों व मनुस्मृति में कहे गए हैं। उनसे जो विपरीत हैं, वे पाखण्डी ही हैं। उनके क्या लक्षण? चक्रादि से शरीर के दागने, ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक और काठ (=तुलसी आदि) की माला धारण करने वाले। गरम चक्र आदि से मुद्रा करना (=दागना) और उर्ध्वपुण्ड्र तिलक लगाना नरक-गमन के साधन हैं। इसलिए ये त्याज्य हैं, नरक से डरने वाले श्रेष्ठ जनों द्वारा।

''विभूति का धारण छोड़कर मुझ शिवलिंगरूपी विश्ववेश की पूजा मत कर।''

मौली की प्रथा भी शास्त्रीय नहीं है। इसकी व्यवस्था आप वेदों अथवा गृह्यसूत्रों में तलाश करेंगे, तो आप को यह नहीं मिलेगी। मौली बांधना वैदिक कालीन नहीं है, मध्यकालीन है। यहाँ तक कि कुम्भ को भी मौली बांधी जाने लगी है। यज्ञ कर्म में यह वाञ्छनीय भी नहीं है। हमारे विचार में जब महिलाओं व पुरुषों पर विदेशी-विधर्मी राजाओं द्वारा अत्याचार होने लगे, तो मौली बांधने की परम्परा आरम्भ हुई। राखी के रूप में बहने अपने भाइयों को स्वकीय रक्षार्थ बांधने लगीं। मुसलमान शासकों द्वारा यज्ञोपवीत उतरवाए जाने लगे, सिर कटवाए जाने लगे तो यज्ञोपवीत का रूप व रंग बदल कर पुरुषों ने बांह पर धारण कर लिया। परिवर्तित रूप में यज्ञोपवीत ही है मौली विज्ञजन जानते हैं कि यज्ञोपवीत का एक नाम व्रतबन्ध भी है। इसे पहनने वाला व्रतधारी बनता है। जब किसी विधर्मी विदेशी का राज नहीं है तो यज्ञोपवीत पर संकट भी नहीं है। हमें इसे ही धारण करना चाहिए।

अन्त में निवेदन है कि कर्मकाण्ड सम्बन्धी सभी कर्मों में उनके शास्त्रीय, वैज्ञानिक, बौद्धिक तथा तार्किक समाधान आपके पास होने चाहिए, न कि ऐसा कहा जाता है, ऐसा माना जाता है, इसीलिए हमें भी मानना चाहिए।

- चूना भट्टियाँ, सिटी सेन्टर के निकट,
यमुनानगर-१३५००१ (हरियाणा)

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

संस्था - समाचार

१ से १५ नवम्बर २०१४

१. यज्ञ एवं प्रवचन:- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान, आर्यजगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा पूर्व निर्धारित मन्त्र का महर्षि दयानन्द कृत भाष्य का स्वाध्याय भी किया जाता है। दोनों समय प्रवचन, स्वाध्याय की व्यवस्था है। इन प्रवचनों, स्वाध्याय के वेदमन्त्रों तथा ऋषिकृत ग्रन्थों पर क्रमश: विचार किया जाता है।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में **स्वामी ध्रुवदेव जी** ने लक्ष्य, लक्ष्य प्राप्ति के साधन, प्रत्येक आश्रम के व्यक्ति के लिए ग्रहणीय-अग्रहणीय बातें, सत्यता का ज्ञान आदि विषयों का सरल-सटीक प्रतिपादन किया। आप अपने वक्तव्य को वेदमन्त्रों के माध्यम से भी पुष्ट करते रहते हैं। सायंकालीन प्रवचन के क्रम में महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल के **ब्रह्मचारी जयदेव जी** ने व्याकरण के अध्ययन का महत्त्व बताया। आपने बताया कि जिस प्रकार सन्ध्या, हवन आदि नित्यकर्म प्रतिदिन न करने से व्यक्ति को पाप लगता है उसी प्रकार संस्कृत भाषा, व्याकरण आदि को न जानने पर भी व्यक्ति को पाप लगता है।

रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणमिति- जो वेदों की रक्षा करना चाहते हैं, चाहते हैं कि सारे संसार में वेद का प्रचार हो तो उनको तत्त्वज्ञान के लिए व्याकरण पढ़ना चाहिए।

प्रयोजन- **ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्म: षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च इति। प्रधानं च षट्स्वङ्गेषु व्याकरणम्। प्रधाने कृतो यत्न: फलवान् भवति।**

जो ब्राह्मण वृत्ति का व्यक्ति है, जो शास्त्रादि का ज्ञान करके अपने आत्मतत्त्व की उन्नति करना चाहता है उसका निष्कारण धर्म है कि संसार में बिना प्रयोजन के अर्थात् इससे मुझे ये मिलेगा, ऐसा कोई सांसारिक प्रयोजन न हो, ऐसे छ: अङ्गों सहित वेदों को पढ़े जिसमें व्याकरण का और मोक्ष आदि का क्या सम्बन्ध है। व्याकरण एक दृष्टि है देखने का तरीका है जैसे एक योगी व्यक्ति जिस प्रकार से पदार्थों को देखता है सामान्य व्यक्ति नहीं देख सकता। एक वैज्ञानिक जिस प्रकार परमाणु विज्ञान को समझता है दूसरा व्यक्ति उन चीजों को नहीं समझ सकता। एक वैद्य जिस प्रकार औषध विज्ञान को जानता है सामान्य व्यक्ति नहीं जान सकता। इसी प्रकार एक वैयाकरण व्यक्ति शब्द विज्ञान को समझता है दूसरा व्यक्ति शब्द विज्ञान को नहीं समझ सकता। वैयाकरण को विशिष्ट ज्ञान उत्पन्न होता है शब्दों को समझने के लिए विशेष दृष्टि मिल जाती है। और भी जब व्यक्ति शब्द ब्रह्म में निष्णात् होता है तो कहते हैं कि वह **'परं ब्रह्मादि गच्छति'** को प्राप्त करता है। ये भी वचन मिलता है और आगे यहाँ तक भी कहा है कि-

उपासनीयं यत्नेन शास्त्रं व्याकरणं महत्।
प्रदीपभूतं सर्वासां विद्यानां यदवस्थितम्।

कि महान् शास्त्र-व्याकरण की उपासना करनी चाहिए, क्योंकि ये सभी विद्याओं का दीपक है, जब व्यक्ति संस्कृत को ठीक से समझ लेता है, व्याकरण को ठीक से जान लेता है तो शब्दों का प्रकाश उसके मन में उत्पन्न होता है।

अब व्याकरण वेद मन्त्रों में क्या करेगा- जब आप वेद मन्त्र का पाठ करेंगे तब-

ओ३म्- अग्निमी'ळे पुरोहि'तं यज्ञस्य' देवमृत्विज॑म्।
होता'रं रत्नधात'मम्।।१।।

अब इसमें व्याकरण लगाते हैं तो अर्थात्

व्याक्रियन्ते जायन्ते शब्दार्थसम्बन्ध: अनने इति व्याकरण्।

जिसके द्वारा शब्द अर्थ और उसका सम्बन्ध जाना जाता है उसको व्याकरण कहते हैं तो आप यह देखिए। पहला ही शब्द है अग्नि। अब यह अग्नि क्या है? परमात्मा इसका नाम कैसे है? यह अग्नि शरीर में कहाँ रहती है। अन्तरिक्ष तथा द्युलोक में कहाँ मिलती है? यह पुरोहित कैसे है? यह ऋत्विक कैसे है? यह होता कैसे है? इसका यज्ञ से क्या सम्बन्ध है? किस यज्ञ की चर्चा चल रही है? आदि-आदि जब इन चीजों का ज्ञान नहीं होगा तो, पुरोहित अग्नि की मैं स्तुति करता हूँ और ये-ये विशेषण वाली है रत्नों की प्राप्ति कराने वाली है इत्यादि का कैसे ज्ञान होगा और रत्नों की प्राप्ति नहीं हो सकेगी। जब हम व्याकरण लगायेंगे तब- अङ्गेर्नलोपश्च की अग्नि- अगि गतौ धातु है तथा नि प्रत्यय है तब इसका निर्वचन- अङ्गति गच्छति आप्नोति प्राप्नोति इति अग्नि हुआ। हमने इसका व्याकरण किया या विभाग किया। धातु क्या है, प्रत्यय क्या है, काल क्या है? तो उसके द्वारा शब्द के अर्थ के सम्बन्ध को हम

जानेंगे, तो इससे क्या सिद्ध हुआ? यह कर्त्ता में है अर्थात् यह कोई द्रव्य या पदार्थ को कहता है। व्याकरण के दो विभाग है एक निरुक्त भी है। निरुक्त में इसका और विशेष अर्थ बताया है। अग्नि- अग्रणी भवति, अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते, आदि-आदि पाँच अर्थ किये हैं। व्याकरण, निरुक्त, शतपतादि ब्राह्मण ग्रन्थों से हमें अग्नि का स्वरूप का पता चला। तो इससे सुस्पष्ट हो जाता है कि यह अग्नि शरीर में कहाँ है। अन्तरिक्ष में कहाँ, द्युलोक में कहाँ है? और इस अग्नि का हम कैसे लाभ उठा सकते हैं और ये अग्नि मिलती कहाँ है? तो यह ऋग्वेद के दूसरे मण्डल में प्रथम सूक्त में बताया गया है कि इस अग्नि को हम कहाँ-कहाँ से प्राप्त कर सकते हैं तो सारा सम्बन्ध व्याकरण से जुड़ता चला जाता है। महाभाष्यकार का वार्तिक है शब्द, अर्थ और उसका सम्बन्ध नित्य है और उस नित्यता के कारण शब्दार्थ सम्बन्ध को जाना जा सकता है संस्कृत भाषा वैज्ञानिकी भाषा इसलिए है। वहाँ शब्द के अन्दर अपना स्वयं का विज्ञान है। इसलिए हमें व्याकरण पढ़ना चाहिए।

महर्षि दयानन्द जी का वचन है-

नावेदविन्मनुते तं बृहन्तमिति।

कि जो वेद को नहीं पढ़ा हुआ है वह परमात्मा को भी नहीं जान सकता।

कुत:? क्यों नहीं जान सकता। इसमें कारण क्या है?

सर्वासां विद्यानां वेदे एव अधिकरणमस्ति

सभी विद्याओं का वेद ही आधार है।

नहि तमविज्ञाय कस्यचित्सत्यविद्याप्राप्तिर्भवितुमर्हति। अतो वेदार्थविज्ञानाय सवैर्मनुष्यैः प्रयत्नोऽनुष्ठेय इति।

तो उस वेद ज्ञान की अवहेलना करके उस परमात्मा को कोई नहीं जान सकता। इसलिए सभी मनुष्यों को वेदार्थविज्ञानाय अर्थात् वेद का अर्थ और उसका विज्ञान अर्थात् सम्बन्ध, उसको जानने के लिए महान् पुरुषार्थ करना चाहिए। सिद्ध क्या हुआ ऋषियों के मत में बिना व्याकरण पढ़े हम ठीक से वेद को नहीं समझ सकते।

इसी क्रम में गुरुकुल के स्नातक, स्वाध्याय-साधना में अपनी शक्ति लगाने वाले **ब्रह्मचारी विद्यानन्द जी सत्योपासक जी** ने श्रवण, मनन, निदिध्यासन और साक्षात्कार की महत्ता बताई। आपने बताया कि परोपकारिणी सभा के चिह्न में जो वेद मन्त्र का एक अंश लिखा गया है। यह मन्त्रांश हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है **'संश्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि'** जो भी हम सुनें, उसके साथ जुड़ जाएँ, उसे जीवन में उतारे। जो सुने हैं उसे भूले नहीं।

बोध प्राप्ति के लिए श्रवण की आवश्यकता है। श्रवण प्रथम बोध है। इससे आगे है मनन। मनन को ठीक करने के लिए ही हम शास्त्रों का अध्ययन करते हैं। दर्शन, उपनिषदों को पढ़ते हैं। मनन सही होने पर ही निदिध्यासन सही होगा, निर्णय सही होगा और उसके बाद ही यथार्थता का साक्षात्कार होना सम्भव है। मूलशंकर को यह प्रथम बोध हुआ कि प्रतिमा पूजन व्यर्थ है वे यहीं पर नहीं रुके। वे मनन करते गये सच्चे शिव की प्राप्ति करना उनका अन्तिम बोध है। हम भी सुने और उसे जीवन में पचाए, उसे भूले नहीं।

श्रुतेन सं गमेमहि, श्रुतेन मा विराधिषि।।

श्रवण का मतलब केवल सुनना मात्र नहीं। रूप, रस, गन्ध, शब्द, स्पर्श का जो इन्द्रियों के द्वारा ज्ञान होता है वह सब श्रवण ही है। इन्द्रियों से गृहीत ज्ञान का संकेत मन तक पहुँचता है और मन से आगे बुद्धि तक। बुद्धि निर्णय करने का काम करती है। बुद्धि ठीक काम कर रही हो तो सही निर्णय मिलता है। गलत काम कर रही हो तो गलत निर्णय। योगदर्शन में अभ्यास और वैराग्य का प्रसंग आता है। हम जितने भी योगाङ्गों का अनुष्ठान करते हैं, वे सब मन की निस्तरंग अवस्था को सात्विक अवस्था को बनाए रखने के लिए ही करते हैं। सात्विक अवस्था में बुद्धि ठीक-ठीक काम करती है। चोरी करने पर, हिंसा आदि करने पर मन में भय, शंका व लज्जा उत्पन्न होती है। इस अवस्था में बुद्धि सही निर्णय नहीं देती। इसलिए मन की सात्विकता को बनाए रखने के लिए सत्संग, स्वाध्याय, यज्ञ आदि करते रहना चाहिए।

२. डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम-सम्पन्न कार्यक्रम- (क) ३ से ५ अक्टूबर २०१४- आर्यसमाज यमुनानगर, हरियाणा के वार्षिकोत्सव में मार्गदर्शन प्रदान किया।

(ख) ६ से १२ अक्टूबर २०१४- आर्य केन्द्रिय सभा करनाल के कार्यक्रम में व्याख्यान प्रदान किए।

(ग) १२ से १९ अक्टूबर २०१४- योग साधना शिविर, ऋषि उद्यान में साधकों का मार्गदर्शन किया।

(घ) ६ से ९ नवम्बर २०१४- आर्यसमाज बड़ा बाजार, सोनीपत के वार्षिकोत्सव में मार्गदर्शन प्रदान किया।

(ङ) १० से १६ नवम्बर २०१४- आर्यसमाज समाना, पंजाब के वार्षिकोत्सव में मार्गदर्शन प्रदान किया।

आगामी कार्यक्रम- (क) १० से १६ दिसम्बर २०१४- पंचकूला में मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

(ख) १३ से १४ दिसम्बर २०१४- सुशान्त लोक, गुड़गाँव, हरि. के कार्यक्रम में भाग लेंगे।

(ग) १६ से १८ दिसम्बर २०१४- आर्यसमाज जागृति विहार, मेरठ के कार्यक्रम में भाग लेंगे।

(घ) २० से २८ दिसम्बर २०१४- आर्यसमाज विधानसरणी, कोलकाता में मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

३. आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम-

(क) १ से ३ अक्टूबर २०१४- आर्यसमाज ककोर, बड़ौत, उ.प्र. में मार्गदर्शन प्रदान किया।

(ख) ५ से ७ अक्टूबर २०१४- आर्यसमाज फतेहपुर रोशनाई, कानपुर, उ.प्र. के कार्यक्रम में भाग लिया।

(ग) १० अक्टूबर २०१४- ग्राम भालोत के कार्यक्रम में।

(घ) ११ से १२ अक्टूबर २०१४- आर्यसमाज जलियावास, रेवाड़ी के कार्यक्रम में व्याख्यान प्रदान किए।

(ङ) २५ से २६ अक्टूबर २०१४- आर्यसमाज लोहाना, रेवाड़ी के कार्यक्रम में उद्‌बोधन प्रदान किए।

(च) २६ से २९ अक्टूबर २०१४- वैदिक भक्ति साधना आश्रम, रोहतक में मार्गदर्शन प्रदान किया।

(छ) ७ से ९ नवम्बर २०१४- आर्यसमाज पी.पी. गंज, गोरखपुर के वार्षिकोत्सव में भाग लिया।

(ज) ११ से १८ नवम्बर २०१४- दिल्ली में संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा समायोजित पाठशाला में वरिष्ठ आध्यापकों, विद्यार्थियों को सांख्य दर्शन का अध्यापन कराया।

४. आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम- (क) २५ सितम्बर २०१४- आर्यसमाज बेलका, सहारनपुर, उ.प्र. में आर्यवीरों से सम्पर्क किया, एक आर्य परिवार में हवन कराया।

(ख) २६ सितम्बर २०१४- आर्यसमाज उपवन, रुड़की, हरिद्वार में सायं यज्ञ सम्पन्न करवाया तथा उद्‌बोधन प्रदान किया, पुन: रात्रि में आर्यसमाज रुहालकी दयालपुर, हरिद्वार में सत्संग प्रदान किया जिसमें ग्राम के अनेक स्त्री-पुरुषों-बच्चों ने भाग लिया। अगले दिन प्रात: पुन: यज्ञ एवं सत्संग हुआ।

(ग) २७ सितम्बर २०१४- ग्राम आमकी दीपचन्दपुर में मिन्टू आर्य जी के यहाँ यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

(घ) २८ सितम्बर २०१४- डी.ए.वी. टावर, सहारनपुर के विद्यार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान कर उनकी शंकाओं का भी समाधान किया पुन: ग्राम साहना माजरा के एक विद्यालय में भी इसी प्रकार का कार्यक्रम सम्पन्न कराया।

(ङ) १ से ०२ अक्टूबर २०१४- ग्राम कुकानी के वार्षिकोत्सव में भाग लिया। ०३ अक्टूबर २०१४ को ग्राम अम्बोली में सुनील आर्य जी के यहाँ यज्ञ एवं प्रवचन सम्पन्न कराया।

(च) ५ से १२ अक्टूबर २०१४- आर्यसमाज बख्शीनगर, जम्मू के कार्यक्रम में मार्गदर्शन प्रदान किया।

आगामी कार्यक्रम (क) अण्डमान व निकोबार द्वीप समूह में प्रचार कार्यक्रम- आचार्य कर्मवीर जी अपने सहयोगी ब्र. प्रभाकर जी के साथ द्विमासीय प्रचार यात्रा के लिए २५ नवम्बर को कोलकाता से पोर्ट ब्लेयर के लिए प्रस्थान करेंगे। यहाँ आप विद्यालयों, पार्कों आदि में जाकर, नैतिक शिक्षा, शारीरिक शिक्षा आसन, प्राणायाम आदि के माध्यम से वैदिक धर्म के प्रचारार्थ नींव तैयार करने का प्रयास करेंगे। यह कार्यक्रम परोपकारिणी सभा द्वारा वैदिक धर्म के प्रचारार्थ किए जाने वाले कार्यक्रमों में से एक है।

५ आचार्य सत्यप्रिय जी का प्रचार कार्यक्रम- (क) ८ से ११ अक्टूबर २०१४- ग्राम पिपरा, टीकमगढ़, म.प्र. में आर्यसमाज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में बच्चों को आर्यवीर दल का शारीरिक प्रशिक्षण प्रदान किया। इसके साथ-साथ यज्ञ-प्रवचन का कार्यक्रम भी चलता रहा।

(ख) १७ से २० अक्टूबर २०१४- अजमेर व इसके निकटवर्ती जिलों के प्रमुख ग्रामों, कस्बों यथा-पर्वतसर, किशनगढ़, बडू, कुचामन सिटी आदि स्थानों पर जनसम्पर्क का कार्य किया। इति।।

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ नवम्बर २०१४ तक)

१. श्री निखिलेश सोमानी, अजमेर २. श्रीमती शोभना रस्तोगी, गुड़गाँव, हरि. ३. श्री शिवकुमार मदान, नई दिल्ली ४. श्रीमती प्रेमवती देवी आर्या, बुलन्दशहर, उ.प्र. ५. श्री प्रणव आर्य ६. श्री सत्यनारायण महेश्वरी, अजमेर ७. श्री भँवरलाल व्यास, भीलवाड़ा, राज. ८. श्री राधेश्याम माहेश्वरी, अजमेर ९. श्री सुरेश कुमार सैनी, विदिशा, म.प्र. १०. श्री संजय, नान्देड़, महा. ११. श्री चेतन आर्य, मन्दसौर, म.प्र. १२. श्रीमती बसन्ती देवी, सीकर, राज. १३. श्री अशुतोष आर्य, टाटा नगर, झारखण्ड १४. श्री रामप्रकाश शर्मा, जोधपुर, राज. १५. श्री नरपतसिंह आर्य, जालौर, राज. १६. श्री देवमुनि, अजमेर १७. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर १८. श्री डॉ. किशोर काबरा, अहमदाबाद, गुज. १९. श्री त्रिभुवनराज भण्डारी, जोधपुर, राज. २०. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर २१. श्री यशपाल यश, जयपुर, राज. २२. श्रीमती राजेश्वरी, श्रीगंगानगर, राज. २३. श्री रामचन्द्र, नजफगढ़ २४. श्री अजय कुमार चितगंजन, प. बंगाल. २५. श्री ओमप्रकाश, दिल्ली २६. श्री कोमलसिंह, दिल्ली २७. श्री रामचन्द्र सिंह, गोपालगंज, बिहार २८. श्रीमती पूनम शर्मा, दिल्ली २९. श्री बलवीरसिंह बत्रा, अजमेर ३०. श्रीमती शैलबाला आर्या, ज्वालापुर ३१. श्रीमती द्रोपदी, ज्वालापुर ३२. श्रीमती राजेश्वरी देवी, ज्वालापुर ३३. श्रीमती पुष्पलता उपाध्याय, अजमेर ३४. श्री चेतराम आर्य, रेवाड़ी, हरि. ३५. श्री सुदर्शनसिंह कोठारी, उदयपुर, राज. ३६. श्री बसन्तलाल शर्मा, सुजानगढ़, राज. ३७. श्री मोहनलाल आर्य, नागौर, राज. ३८. श्री रजनीश कपूर, दिल्ली।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ नवम्बर २०१४ तक)

१. श्री रघुवीरसिंह गुर्जर, अजमेर २. श्रीमती कान्ता बालमुकुन्द छापरवाल, अजमेर. ३. श्री पी.के. खन्ना, अजमेर ४. श्री गोपीचन्द अग्रवाल, अजमेर ५. श्री रमेशचन्द शर्मा, अजमेर ६. श्री राजेन्द्रसिंह मलिक, सोनीपत, हरि. ७. श्रीमती संयोगिता आर्या, रेवाड़ी, हरि. ८. श्रीमती सुधा आर्या, अजमेर ९. श्री कन्हैयालाल आर्य, सुजानगढ़, राज. १०. श्री सुगनाराम कालेर, सुजानगढ़, राज. ११. श्री आर्यन, रेवाड़ी, हरि. १२. श्री ताराचन्द शास्त्री, रेवाड़ी, हरि. १३. श्री बलवीर सिंह, रोहतक, हरि. १४. श्री इन्द्रदेव आर्य, दिल्ली. १५. श्री मानकंवर, अजमेर १६. श्रीमती कमला तँवर, अजमेर १७. श्री सन्तोष कुकरेजा, करनाल, हरि. १८. श्री दयाव्रत शास्त्री, सोनीपत, हरि. १९. आर्यसमाज भरतपुर, राज. २०. श्रीमती माँगीदेवी, सुमेरपुर, राज. २१. श्री श्यामसुन्दर राजावत, अजमेर २२. श्रीमती मृदुला वाजपेयी २३. श्री मदनलाल पटेल, हैदराबाद २४. श्री सुशील शर्मा, अजमेर २५. श्री बाबूलाल जोशी, इन्दौर, म.प्र. २६. श्रीमती अरुणा गौड़, अजमेर २७. श्री रामप्रसाद, अजमेर २८. श्री सीताराम आर्य, शाहजापुर २९. श्री बुद्धराज, करनाल, हरि. ३०. श्रीमती सुरेखा आर्या, करनाल, हरि. ३१. श्री वेद चाँवला, रोहना ३२. श्री मनोहरलाल, मन्दसौर, म.प्र. ३३. श्री मा. सत्यवीर, हरि. ३४. श्री खेड़ी आर्यनगर, छोटी सादड़ी, राज. ३५. श्री देवीलाल पाटीदार, छोटी सादड़ी, राज. ३६. श्री कुम्माराम टाँक, पीपाड़ सिटी, राज. ३७. आर्यसमाज अमारी, बिहार ३८. श्री मगाराम घासी, पाली, राज. ३९. श्री पीयूष अमय कुलकर्णी, नान्देड़, महा. ४०. कुमारी गारमी अजय, महा. ४१. श्रीमती अनिता, बिहार ४२. श्री बालचन्द जांगिड़, लाडनूँ, राज. ४३. श्री प्रमोद कुमार आर्य, गोरखपुर, उ.प्र. ४४. श्री महेन्द्रसिंह आर्य, करनाल, हरि. ४५. श्री रमेशदत्त दीक्षित, बागपत, उ.प्र. ४६. श्री

कचरु, बालगुडा, म.प्र. ४७. श्रीमती सुनीता सहगल, ग्वालियर, म.प्र. ४८. श्री कक्कड़, गुड़गाँव, हरि. ४९. श्री अशोक मक्कड़, गुड़गाँव, हरि. ५०. श्री अनिल वर्मा, गुड़गाँव, हरि. ५१. श्री रायमल ढ़ाका, बाड़मेर, राज. ५२. श्री सन्दीप हरचन्दानी, चुरू, राज. ५३. श्रीमती स्तुति सृष्टि, चण्डीगढ़, पंजाब ५४. श्री कमलेश राठौड़, ग्वालियर, म.प्र. ५५. श्री तुलसीराम आर्य, ग्वालियर, म.प्र. ५६. श्री नरपतसिंह गहलोत, जोधपुर, राज. ५७. श्रीमती बीना देवी, बिहार ५८. श्री सत्यनारायण माहेश्वरी, अजमेर ५९. श्रीमती शोभा जादोन, अजमेर ६०. श्री मनीष ओलानिया, विजयलक्ष्मी सोनी, जयपुर, राज. ६१. आर्यसमाज भावा, राजसमन्द, राज. ६२. श्री शशी सैनी, अजमेर ६३. श्रीमती सीता देवी, अजमेर ६४. श्रीमती वेदबाला आर्या, चुरू, राज. ६५. श्रीमती वेदवीणा आर्या, चुरू, राज. ६६. श्री वासुदेव डीसा, गुजरात ६७. श्री मूलचन्द तोषनिवाल, कोटा, राज. ६८. श्री रामस्वरूप ६९. वेद साहित्य बिक्री केन्द्र, मोहिहुड्डा ७०. श्रीमती सन्तोष देवी आर्या, जयपुर, राज. ७१. श्री विनोद आर्य, झज्जर, हरि. ७२. श्रीमती वादु आर्या, उ.प्र. ७३. श्री हरिश चन्द्र आर्य, उ.प्र. ७४. श्रीमती सावित्री दुबे, अजमेर ७५. श्री ओमप्रकाश मादोरिया, ग्वालियर, म.प्र. ७६. श्रीमती सुशीला तिवारी, जोधपुर, राज. ७७. श्री देवमुनि, अजमेर ७८. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ७९. श्री सत्यनारायण बंसल, अजमेर ८०. श्री मयंक, अजमेर ८१. मुन्दड़ी मौहल्ला, घी मण्डी विकास समिति, अजमेर ८२. श्री महावीर, अजमेर ८३. श्री राजेश त्यागी, अजमेर ८४. श्रीमती शकुन्तला देवी, शाहाजापुर, उ.प्र. ८५. श्री विरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. ८६. श्री शान्तिस्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर, राज. ८७. श्री समुन्दरसिंह राठौड़, अजमेर ८८. श्री अमरीश कुमार अग्रवाल, लखनऊ, उ.प्र. ८९. श्रीमती सुषमा मल्हौत्रा, पानीपत, हरि. ९०. वानप्रस्थी कमला देवी आर्या, सहारनपुर, उ.प्र. ९१. श्री जबेरसिंह, सहारनपुर, उ.प्र. ९२. श्रीमती निर्मला, अजमेर ९३. श्रीमती मेहता माता, अजमेर ९४. श्रीमती शैलबाला, ज्वालापुर ९५. श्रीमती सुशीला माता, दिल्ली ९६. श्री महेन्द्र मोहन आर्य, श्रीगंगानगर, राज.।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

प्रतिक्रिया

आदरणीय प्रकाशक महोदय। आपकी पत्रिका पढ़कर बहुत अच्छा लगता है। यह आर्यसमाज का अच्छा प्रचार कार्य कर रही है। पंजाब में तो आर्यसमाजों का काम न के बराबर है। सन्त रामपाल ने आर्यसमाज का बहुत खण्डन किया है और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के बारे में बहुत अभद्र शब्दों का प्रयोग किया है। मैंने उनको एक पत्र लिखा है। डी.ए.वी. संस्था के माध्यम से काफी प्रचार कार्य हो रहा है। आप जिस लगन से काम कर रहे हैं, वह बधाई के योग्य है। युवा वर्ग आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर नहीं चल रहा है। कृपया इस पर भी ध्यान दीजिए।

- वेदप्रकाश, अमृतसर, पंजाब

परोपकारी पत्रिका का सितम्बर द्वितीय २०१४ का अंक मिला। पृष्ठ २१ पर अंकित प्रतिक्रिया स्तम्भ के अन्तर्गत डॉ. वेदप्रताप वैदिक ने- परोपकारी अगस्त द्वितीय-२०१४ के सम्पादकीय लेख- 'वैदिक इतने अवैदिक क्यों?' के प्रतिवाद में मात्र दो पंक्तियाँ लिखी हैं, जिन्हें पढ़कर मैं स्तम्भित रह गया, सोचा कि एक वैदिक विद्वान् की ऐसी भाषा हो ही नहीं सकती। मैंने पुन: उक्त सम्पादकीय को आद्योपान्त पढ़ा। सम्पादक ने अपने विचार की पुष्टि में १८६ पंक्तियों का सहारा लेकर 'अवैदिक' की सिद्धि में पुरुषार्थ किया है। इधर श्री वैदिक जी ने प्रतिवाद स्वरूप मात्र दो पंक्तियाँ लिखी है। ये मात्र दो पंक्तियाँ इनके ही लिये तो आत्मघाती सिद्ध हो रही हैं और उधर सम्पादक की १८६ पंक्तियों की आश्चर्यजनक रूप से सहकारी होकर- 'अवैदिक' की सिद्धि में सहायक बन पड़ी है। अब तो सम्पादक जी को इसके लिये श्री वेदप्रताप वैदिक जी का धन्यवाद करना शेष रह जाता है। सभी को धन्यवाद।

- स्वामी सत्यव्रतानन्द सरस्वती, दयानन्द आश्रम कुटीर, एल.बी. ४२, न्यू इन्दिरा कॉलोनी

गुरुजनों की शिक्षा से सब को सुख बढ़ता है। **- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.२९**

हनुमान की उड़ान

- डॉ. बाल फोंडके

विश्व क्रीडा स्पर्धा (ओलंपिक) में दौड़ के लिए सिटियस, आल्टियस, फोर्टियस यह मानवों का ध्येय रहा है। मनुष्य अपने शक्ति से अधिक वेग, अधिक ऊँचाई, अधिक साहस प्राप्त करें, यह धारणा उसके पृष्ठभूमि में है। इसीलिए सौ मीटर की दौड़ जीतने वाले खिलाड़ी को दुनिया के सबसे वेगवान मनुष्य के रूप में यह सम्मान दिया जाता है। उसेन बोल्ट ने आज तक किसी ने भी न प्राप्त की हो ऐसी गति से दौड लगाकर इस सम्मान को सार्थक किया है। उसने जो गति प्राप्त की वह मानुषी गति आज तक की आश्चर्यजनक गति है ऐसा यदि कोई कहे तो उसमें दो राय नहीं हो सकती। किन्तु इससे पहले जरा फेलिक्स बॉम गार्टनर ने प्राप्त की वेग/गति पर हम किंचित विचार करें। हाल ही में उसने लडाकू विमान (जेट) से भी अधिक गति से आकाश से भूमि की ओर उडान भर दी और वह भी आकाश की सीमा रेखा की उंचाई से। इसका अर्थ यह हुआ कि इस एक ही कृति में उसने सर्वाधिक ऊँचाई प्राप्त की, सर्वाधिक गति प्राप्त की और सर्वाधिक साहस दिखाया। ऐसी कितनी ऊँचाई पर गया था बॉम गार्टनर? ३९००० मीटर अथवा ३९ कि.मी. की ऊँचाई। जिस अति गतिमान विमान में बैठकर आज के यात्री एक देश से दूसरे देश में जाते है, वह भी ३० कि.मी. ऊँचाई पर नहीं जाते। बॉम गार्टनर के इस विराट साहस को प्रायोजित किया था रेड बुल कम्पनी ने और उसे नाम दिया था आकाश की सीमा रेखा।

बॉम गार्टनर के इस अफलातून यात्रा को कुल पन्द्रह-बीस मिनट की ही कालवधी लगी, फिर भी उसकी तैयारी गत कुछ वर्षों से हो रही थी। इसलिए कि ३९ कि.मी. की ऊँचाई पर पहुँचना आसान नहीं था। यहाँ कोई प्रश्न कर सकता है कि अन्तरिक्ष यान को तो ३७००० कि.मी. की ऊँचाई पर रॉकेट्स पहुँचा देते हैं, फिर उसके एक हजार अंश ऊँचाई पर पहुँचना क्या कठिन है? तात्त्विक दृष्टि से यह अशक्य नहीं है। इसके लिए रॉकेट्स की गति मर्यादित करनी होगी। अन्य समय पर रॉकेट की गति पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण पर प्रभुत्व पाकर पृथ्वी की पकड़ से बाहर होने के लिए जितनी आवश्यक है उतनी रखी जाती है। इसीलिए अन्तरिक्ष यान पृथ्वी की आकर्षण शक्ति की कक्षा के बाहर जाकर, अपनी स्वतन्त्र कक्षा में जाकर पृथ्वी के परिधि में घुमते रहते हैं। यदि यह गति कम हो गई तो वह यान पृथ्वी की ओर सतत आकर्षित होकर पृथ्वी पर आ जाएगा। बॉम गार्टनर को अन्तरिक्ष में बाहर जा कर पृथ्वी की ओर कूदना था। इसलिए इस ३९ कि.मी. की ऊँचाई पर जाकर कुछ समय के लिए वह यान वही रहना जरुरी था। इसके अलावा उसे गन्तव्य स्थान पर पहुँचने तक पृथ्वी पर जो स्थिति होती है उसी स्थिति में रहना आवश्यक था। इस स्थिति के लिए एक विशेष कक्ष का गुब्बारा 'कैप्सूल' बनाया गया। इसका अन्दर का भाग फायबर से बना था। अढ़ाई मीटर व्यास का गोलाकार यह गुब्बारा अन्दर से ईपौक्सी सीमेन्ट से बन्द कर दिया था। अन्दरूनी भाग वातानुकुलित तो था ही, साथ-साथ अन्दर की आर्द्रता भी उचित मात्रा में स्थिर रखी गई थी । इसलिए बॉम गार्टनर को पृथ्वी के समान वातावरण में रहने की सुविधा मिल गई।

३९ कि.मी. की ऊँचाई पर हवा अति विरल होती है। इसी कारण हवा का दाब बहुत कम हो जाता है। हवा का दाब समुद्र तल पर एक वर्ग सेन्टीमीटर पर एक किलोग्राम होता है। जिस गुब्बारे में बाम गार्टनर को ३९ कि.मी. की ऊँचाई पर जाना था, उसमें भी यही हवा का दाब होगा यह निश्चित करना आवश्यक था। आकाश की सीमा रेखा पर हवा का दाब केवल ६० ग्राम प्रति वर्ग सेन्टीमीटर ही होता है। अब आकाश की सीमा रेखा पर पहुँचने पर गुब्बारे के बाहर और अन्दर के हवा के दाब में यह अन्तर होने से जो परिणाम होगा, उसको सहने की क्षमता उस गुब्बारे में होना आवश्यक थी। इसलिए उसे सक्षम बनाना आवश्यक था। वैज्ञानिक भाषा में उसे प्रेशर व्हेसल समान बनाना ऐसा कहते हैं। इसलिए उस गुब्बारे के फायबर ग्लास के ऊपर क्रोमियम और मॉलिबडेनम् के मिश्रण से बने पोलाद का पिंजरा बिठाया गया। फिर भी समुद्री तल पर हवा का दाब और ३९ कि.मी. ऊँचाई का दाब इनका करीब पन्द्रह गुणा अन्तर सहन करने की क्षमता वाला प्रेशर व्हेसल बनाना अशक्य प्राय: था। इसके लिए इस गुब्बारे अर्थात् कैप्सूल के बाह्य भाग में ५०० ग्राम प्रति सेन्टीमीटर वर्ग दाब मिले ऐसी व्यवस्था कर दी गई थी।

प्रश्न केवल हवा के दाब का नहीं था। तापमान का भी प्रश्न था। कारण यह था कि जिस ऊँचाई पर हमारा कैप्सूल पहुँचने वाला था और कुछ समय के लिए स्थिर रहने वाला था वहाँ का बाह्य तापमान शून्य से ५७ डिग्री सै. कम था। यह तापमान कैप्सूल सह सके इसके लिए उस पोलादी पिंजरे पर बाहर से एक विशेष फायबर ग्लास का आवरण चढ़ाया गया। अब इस कैप्सूल का कुल वजन १३२० किलोग्राम हो गया। उसे वहीं अवकाश में कचरे के सामन फेंकना नहीं था। उसे वापस धरती पर लाना था। वह तब भूमि पर आएगा जब उसे गुरुत्वाकर्षण शक्ति से आठ गुणा शक्ति का धक्का सहन करने के लिए उसके निम्न तल पर एक एल्युमीनियम का स्तर बिठाया गया, जिसकी रचना मधुमक्खी के छत्ते के समान थी। यह भी हो सकता है, टूट जाएगा इस शंका के कारण एक विशेष प्रकार के कागज का मोटी परत लगाई गई थी।

इतनी तैयारी करनी पड़ी उस कैप्सूल की जिसमें हमारा हनुमान अर्थात् बॉम गार्टनर बैठकर उस ऊँचाई पर पहुँचने वाला था किन्तु उसे वहाँ तक पहुँचाए कैसे? कोई विमान उसे वहाँ तक ले जाय यह तो अशक्य था। इसके लिए फिर एक विशेष गुब्बारा बनाया गया। उसकी जाड़ी केवल बीस मायक्रॉन अर्थात् एक मिलिमीटर का दो शतांश थी। इस बलून को और मजबूत बनाने के लिए उस पर एक पौलिएस्टर का अस्तर लगाया गया। इस बलून को उड़ना था इसलिए इसमें हीलियम गैस भरी गई। इस प्रकार पूर्ण रूप से हवा भरने के पश्चात् इस बलून की ऊँचाई २१२ मीटर अर्थात् एक ५० मंजिला घर की ऊँचाई के समान हो गई। इस आकार के बलून में हवा भरने के लिए तीन करोड़ धन फीट अर्थात् दो ट्रक हीलियम् वायु लगी और यह वायु भरने की प्रक्रिया दो घन्टे तक चली। बॉम गार्टनर के इस घर को निश्चित ऊँचाई पर पहुँचाने का कार्य पूर्ण करने के लिए उस बलून को तीन घन्टे लगे। यह कार्य पूर्ण करने के पश्चात् रिमोट कन्ट्रोल की पद्धति से बलून के अन्दर का वायु बाहर निकाला गया और उसके पश्चात् यह बलून का कलेवर गुरुत्वाकर्षण शक्ति से भूमि की ओर खिंचा गया। यह बलून फिर से उपयोग में ला सके ऐसे ही, उसे तैयार करने वालों की अपेक्षा है।

आकाश की सीमा रेखा पर पहुँचकर बलून और कैप्सूल वहीं पर स्थिर हो गया। बॉम गार्टनर कैप्सूल में से बाहर आया अर्थात् आकाश में उस वातावरण में संचार कर सके इसलिए आकाश यात्री जो पहनावा पहनते हैं वैसा ही विशेष स्पेस सूट पहनने को वह भूला नहीं। चार किलोग्राम के वजन के उस विशेष सूट में समुद्रतल समान हवा के दाब के पाँचवे अंश के समान दाब रखा गया था। बॉम गार्टनर के लिए उस वातावण में श्वास लेने के लिए ऑक्सीजन वायु की अलग से उस स्पेस सूट में व्यवस्था की गई थी। कलई पर उस सूट पर ऊँचाई दर्शाने वाला संयन्त्र अर्थात् अल्टीमीटर बिठाया गया था और दोनों घुटनों पर बिठाये गए कैमरे हर समय चित्रण करेंगे यह व्यवस्था भी कर दी गई थी।

अपने इस कैप्सूल में से आकाश में पांव रखने के त्वरित बाद बॉम गार्टनर पर गुरुत्वाकर्षण के बल के बिना अन्य किसी बल का प्रभाव नहीं रहा। अनायास ही वह मुक्त होकर धरती की दिशा में अति वेग से जाने लगा। इसी को 'फ्री फॉल' कहते हैं। अपना भार गुरुत्वाकर्षण के खींचाव के कारण ही अपने को प्राप्त होता है। इसलिए 'फ्री फॉल' की अवस्था में 'शून्य वजन अवस्था' का अनुभव आता है।

गुरुत्वाकर्षण के कारण उस वस्तु का वेग बढता है। किन्तु इस वेग की बढोत्तरी का अनुपात वही रहता है, बदलता नहीं। बॉम गार्टनर को भी यही अनुभव हुआ। उसका वेग बढ़ते-बढ़ते १३३० कि.मी. प्रति घण्टा तक पहुँचा। ध्वनि का वेग ११२५ कि.मी. प्रति घण्टा होता है, यह वेग भी उसने पार किया। किसी भी वाहन की अथवा बाह्य उपकरण की मदद के बिना, कल्पनातीत वेग से यात्रा करने वाला वह प्रथम मानव बना। क्षण-क्षण में उसका वेग नापने के लिए और उसका रक्तदाब हृदय की धड़कन इत्यादि नापने के लिए उसके छाती पर यान्त्रिक उपकरण बिठाए गए थे। उसमें से निकले निष्कर्ष से, वह किस गति से धरती की ओर आया यह स्पष्ट होगा।

भारविरहित अवस्था में 'फ्री फॉल' से गिरने वाली वस्तु अपनी ही परिधि में घूमती हुई नीचे की ओर जाती है। बॉम गार्टनर को इसका ही भय था और वह कुछ क्षण के लिए घूमा भी। और इस प्रकार घूमने से उसके ऊपर भार बढने की शक्यता थी और ऐसा हुआ तो बेसुध होने की और दिमाग में होने वाले रक्त प्रवाह में अस्थिरता होकर गम्भीर क्षति होने की सम्भावना थी। ऐसा न हो इसलिए उसका भूमि स्थित नियन्त्रण कक्ष से लगातार सम्पर्क बनाया गया और वह उसे होने वाले सभी अनुभवों

एवं प्रभावों की जानकारी देता रहे इस प्रकार की व्यवस्था बनाई गई थी। यदि उसके शरीर पर गुरुत्वाकर्षण के दाब से साढ़े तीन गुणा अधिक हो गया तो उसके सूट में स्थित विशेष यन्त्र कार्यान्वित होकर उसका मुक्त घूमना बन्द होकर वह सीधी दिशा में नीचे की ओर जाने में यशस्वी हुआ तो भी 'फ्री फॉल' की अवस्था में रहते हुए अपने हेल्मेट की काँच लगातार घूसर होने की और अपना दाहिना पांव फूलने लगा है यह शिकायत उसने की।

फिर भी उसकी 'फ्री फॉल' की अवस्था चार मिनिट बीस सेंकण्ड इतनी ही रही। यह साढे छः मिनिट से अधिक होगी यह पुर्वानुमान किया गया था। किन्तु अपेक्षा से अधिक गति प्राप्त होने के कारण उसे लगने वाली गति कम हो गई। पृथ्वी के समीप वाले धनरूप वातावरण में प्रवेश करते ही उसके ऊपर के होने वाले गुरुत्वाकर्षण के खीचांव के विरोध में घर्षण रूप इतर शक्ति भी कार्यान्वित हो गई। परिणामस्वरूप उसकी गति तेजी से कम होने लगी। यह उचित हुआ। कारण जब तक यह गति २७७ कि. मी. प्रति घण्टा से कम नहीं होती, तब तक उसके साथ की हवाई छत्री पैराशूट को वह खोल नहीं सकता था। सुरक्षा की दृष्टि से एक मुख्य और एक सहायक ऐसे दो पैराशूटस उसके पास थे। यदि भूमि से २००० फीट की ऊँचाई पर रहते उसकी गति ३७ मी. प्रति सेकण्ड से अधिक रहती तो मुख्य पैराशुट अपने आप खुल जाता। किन्तु इसकी आवश्यकता ही नहीं लगी। इसके पश्चात् वह धीरे-धीरे उतरता हुआ पन्द्रह मिनिट के पश्चात् उसने धरती पर पाँव रखे। जिसे न्यु मेक्सिको की रेतीली जमीन पर यह दृश्य देखने के लिए जनमानस की भीड़ उमड़ पड़ी थी। निश्चित रूप से वह उसी स्थान पर कैसा आया, यह अभी तक किसी ने नहीं बताया। इस सारी यात्रा में भूमि पर स्थित नियन्त्रण कक्ष की सूक्ष्म नजर थी। और उसकी स्पेस सूट में रखा वही डिओ कैमेरा लगातार अपने चित्र कक्ष की ओर प्रस्तावति कर रहा था। केवल 'फ्री फॉल' के उस साड़े चार मिनट में, उस अति तीव्र गति के कारण उसे अपना कार्य सुचारु रूप से कर नहीं पाया था। यही परिणाम इस अभूतपूर्व घटना उसी क्षण दुनिया को बताने का कार्यक्रम गूगल ने आयोजित किया था, उसको भी यही कठिनाई का सामना करना पड़ा था। कारण जिस गति से बॉम गार्टनर धरती की ओर आ रहा था, उस गति से विडियो कैमेरा अपना चलचित्रण नहीं कर पाया था।

नील आर्मस्ट्राँग ने जब चन्द्रमा पर पांव रखा था, उस समय उसने कहा था "एक नगण्य मानव का यह छोटा सा पांव है फिर भी मनुष्य ने प्राप्त की हुई यह अतुलनीय सफलता है।" आज बॉम गार्टनर ने भरी हुई यह उत्तुंग उड़ान है। इसकी तुलना तो पौराणिक कथाओं में वर्णित हनुमान जी के कर्तव्य से ही हो सकती है। इसमें कितना तथ्य है यह हम नहीं जानते। किन्तु बॉम गार्टनर की यह उड़ान एक सत्य घटना है, जो दुनिया ने देखी है।

आकाश की परिस्थिति, वहाँ का वातावरण उससे होने वाला मानवीय शरीर पर परिणाम, गुरुत्वाकर्षण की शक्ति, उससे उत्पन्न होने वाली गति, इसके लिए सुरक्षा के उपाय, आज के आधुनिक विज्ञान ने इस क्षेत्र की हुई नेत्र दीपक प्रगति, इसका अभ्यास हमारे आर्य जगत् के वैदिक विद्वानों को प्राप्त होवे इस कारण से यह एक प्रयत्न है। उपरोक्त लेख महाराष्ट्र टाईम्स के वार्तापत्र दिनांक २१ ऑक्टोबर २०१२ में मराठी में प्रकाशित हुआ था। इसका अनुवाद कर आर्यजगत् के जिज्ञासुओं के लिए सविनय सादर है।

महाराष्ट्र टाईम्स मुंबई से साभार।

अनुवादक - माधव के. देशपांडे, रो. हाऊस नं. ३, पिंपके सौदागर पुणे महाराष्ट्र-४११०२७

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जो नित्य पदार्थों में नित्य और स्थिरों में भी स्थिर परमेश्वर है, उस समस्त जगत् के उत्पन्न करने वाले परमेश्वर की प्राप्ति और योगाभ्यास के अनुष्ठान से ही ठीक-ठीक ज्ञान हो सकता है, अन्यथा नहीं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२५

जिज्ञासा समाधान – ७६

– आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा-

१. मनुस्मृति कितनी प्राचीन है?

२. महर्षि दयानन्द ने जो सृष्टि उत्पत्ति का काल १ अरब ९६ करोड़ वर्ष पूर्व बताया है, उन्होंने इस अवधि का निर्धारण किस आधार पर किया है?

– **प्रो. अरविन्द विग**

समाधान- हमारा वैदिक साहित्य प्राचीन है, मनु स्मृति को अत्यधिक प्राचीन माना जाता है। इसका काल आदि सृष्टि है, ऐसा महर्षि दयानन्द व अन्य वैदिक विद्वान् मानते हैं। जो मनु का काल है वही मनुस्मृति का काल है अर्थात् आदि सृष्टि में हुए महर्षि ब्रह्मा के पौत्र मनु हुए। उन्हीं मनु से मनुस्मृति मानव का संविधान रचित हुआ। इससे आदि सृष्टि मनुस्मृति का काल सिद्ध होता है। दूसरा- हमारा प्राचीनतम साहित्य वेद व ब्राह्मण आदि ग्रन्थ हैं, उनमें वेद अपौरुषेय हैं। पौरुषेय ग्रन्थ तैत्तिरीय, आरण्यक आदि ग्रन्थों में मनु की घटनाओं का वर्णन है, इससे भी मनुस्मृति का प्राचीन होना सिद्ध होता है।

इस विषय में मनुस्मृति के आधिकारिक वैदिक विद्वान् मनुस्मृति के भाष्यकार, गुरुकुल कांगड़ी के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र जी ने विस्तार से लिखा है, हम यहाँ उनके लेख को ज्यों का त्यों उद्धृत कर रहे हैं।

''मनु और मनुस्मृति-काल निर्धारण-

मनुस्मृति में हुए प्रक्षेपों में जिन बातों को सर्वाधिक क्षति पहुँचायी है, उनमें एक है- मनु और मनुस्मृति का काल निर्णय। लेखकों ने मनुस्मृति में प्राप्त वर्णनों पर विचार किया है और उनके अनुसार ही काल का अनुमान लगाया गया है। काल निर्णय के लिए आधार बनाए गये उन वर्णनों पर आगे विचार किया जायेगा, जिसके आधार पर मनुस्मृति को अर्वाचिन घोषित किया है। यहाँ प्रथम मनु और फिर वर्तमान मनुस्मृति के काल निर्धारण सम्बन्धी अन्य आधारों पर विचार किया जाता है। पूर्वोक्त विवेचन से यह मत स्थिर हो गया है कि स्मृति, धर्म-नियम आदि प्रसंग में प्राप्त होने वाला मनु स्वायम्भुव मनु ही है। इस समस्त विवेचन और ग्रन्थ में मनु नाम से यही अभिप्रेत होगा।

(क) प्राचीन भारतीय साहित्य में स्वायम्भुव मनु का काल-

मनु के काल का अनुमान लगाने में मनुस्मृति तथा मनुस्मृति से भिन्न भारतीय साहित्य में प्राप्त वंशावलियाँ ही सहायक हैं। मनुस्मृति में तीन स्थानों पर मनु के वंश की चर्चा है-

(क) ब्रह्मा से विराज, विराज से मनु, मनु से मरीचि आदि दश ऋषि उत्पन्न हुए।

(मनु. १.३२-३५)

(ख) ब्रह्मा से मनु ने धर्म शास्त्र पढ़ा, मनु से मरीचि, भृगु आदि ने। यह विद्यावंश के रूप में वर्णन है।

(मनु. १.५८-६०)

(ग) हिरण्यगर्भ= ब्रह्मा के पुत्र मनु हैं और मनु के मरीचि आदि।

(३.१९४)

यद्यपि मनुस्मृति के प्रसंगों में ये तीनों ही स्थल प्रक्षिप्त होते हैं, किन्तु पारम्परिक जनश्रुति के रूप में यदि उन्हें स्वीकार करें तो स्वायम्भुव मनु पुत्र या शिष्य के रूप में ब्रह्मा से दूसरी पीढ़ी में उल्लिखित हैं। यही तथ्य इसके स्वायम्भुव (स्वयं भू=ब्रह्मा, उसका पुत्र या शिष्य) विशेषण से स्पष्ट होता है।

२. महाभारत तथा पुराणों में भी वंशावलियाँ प्राप्त हैं, उनमें भी मनु को ब्रह्मा का पुत्र बताया गया है अथवा शिष्य के रूप में उसका सीधा सम्बन्ध ब्रह्मा से वर्णित है।

(महा. आदि. १.३२/शान्ति. ३३५.४४)

प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक मान्यताओं के अनुसार ब्रह्मा को आदि सृष्टि में माना जता है और भारत का प्रत्येक कुलवंश तथा विद्यावंश ब्रह्मा से ही प्रारम्भ होता है। इस प्रकार मनु का काल भी आदि सृष्टि का स्थिर होता है।

३. इसी मान्यता को निरुक्त (३.४) मनु का मत उद्धृत करते हुए एक श्लोक से पुष्ट किया है-

अविशेषेण पुत्राणां दायो भवति धर्मतः।
मिथुनानां विसर्गादौ मनुः स्वायम्भुवोऽब्रवीत्।।

अर्थात् दाय भाग में पुत्र और पुत्री, दोनों का अधिकार होता है- यह विसर्गादौ=आदि सृष्टि के आदि काल में स्वायम्भुव मनु ने कहा है।

यहाँ स्पष्टतः मनु का काल आदिसृष्टि बताया गया है। महर्षि दयानन्द इसी मत का समर्थन करते हुए लिखते हैं- महर्षि मनु आदि सृष्टि में हुए।

४. भारतीय चतुर्युग और मन्वन्तर काल गणना पद्धति

(मनु. १.६४-७३, ७९, ९०) के अनुसार सृष्टि उत्पत्ति को हुए एक अरब, छियानवे करोड़, आठ लाख, तरेपन हजार, एक सौ चौदह वर्ष बीत चुके हैं और पन्द्रहवाँ सृष्टिसम्वत् इस वर्ष अर्थात् ईस्वी सन् २०१४ और विक्रम सम्वत् २०७१ में चल रहा है। इकहत्तर (७१) चतुर्युगियों का एक मन्वन्तर होता है। स्वायम्भुव, स्वारोचिष, औतमि, तामस, रैवत, चाक्षुष- ये छह मन्वन्तर बीत चुके हैं। सातवाँ वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है। इस मन्वन्तर की चतुर्युगी में यह कलियुग का समय चल रहा है।

इस सृष्टि उत्पत्ति के समय को सुनकर पाश्चात्य और आधुनिक लोग अत्यधिक आश्चर्य करते हैं और विश्वास भी नहीं करते। उन्हें यह जिज्ञासा होती है कि कालगणना का इतना हिसाब कैसे रखा गया। इसके उत्तर में उन्हें एक व्यवहार में प्रचलित प्रमाण सम्पूर्ण देश में उपलब्ध हो जायेगा। भारतीयों ने वर्षों की बात तो छोड़िये पल और प्रहर तक का हिसाब रखा है। ज्योतिषीय पंचांगों में यह आज भी उपलब्ध है। यज्ञ आदि धार्मिक कृत्यों में संस्कार के समय एक संकल्प की परम्परा है, उसमें '**आर्यावर्त्ते वैवस्वतमन्वन्तरे कलियुगे अमुकप्रहरे**' आदि बोलकर विवाह का संकल्प किया जाता है। इस प्रकार परम्पराबद्ध रूप से समय का हिसाब सुरक्षित है।

उपलब्ध भारतीय वंशावलियों के अनुसार ब्रह्मा को आदि वंशप्रवर्तक माना जाता है और मनु उससे दूसरी पीढ़ी में परिगणित है। इस प्रकार इस सृष्टि में जन से मानवसृष्टि का प्रारम्भ हुआ है, स्वायम्भुव मनु उस आदिसृष्टि या आदि समाज के व्यक्ति सिद्ध होते हैं।''

यह मनुस्मृति के भाष्यकार डॉ. सुरेन्द्र जी का मत है। यह मत महर्षि दयानन्द के अनुकूल व तर्क संगत है। इससे सिद्ध होता है कि मनुस्मृति की प्राचीनता आदि सृष्टि से है।

इस विषय में आधुनिक विद्वान् का मत भिन्न मिलता है। वे पाश्चात्य विद्वानों से प्रभावित होते हुए हमारे वैदिक साहित्य को ईशा के पूर्व वा ऊपर ही देखते हैं। इस विषय को विस्तार से देखने के लिए विशुद्ध मनुस्मृति का अवलोकन करें।

(ख) महर्षि दयानन्द का सृष्टि उत्पत्ति काल गणना का आधार उस समय के पंचांग, सूर्य सिद्धान्त आदि ग्रन्थ और श्रुति परम्परा है। महर्षि ने इस बात को ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका के वेदोत्पत्ति विषय में अच्छी तरह स्पष्ट किया है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

पुस्तकें

- मोहनलाल तँवर

पुस्तकें ही विश्व का ये ज्ञान है विज्ञान है,
पुस्तकें ही वेद है और वेद का भगवान है,
संस्कृति सागर में पुस्तकें हैं प्रकाश स्तम्भ,
पुस्तकें खिड़की, जगत् को देखता इंसान है।

हर समस्या के समाधानों के रस्ते न रुकें,
जो जगाने आदमी को दे रही है दस्तकें,
भीड़ में, एकान्त में या मुसीबत के समय,
आपकी है हमसफर बस दोस्त, साथी पुस्तकें।

बात ऋषियों से करें या करें इतिहास से,
आप ये किरदार पायेंगे खुदी के पास से,
यह है पुरखों की विरासत जो मिली है आपको,
ये विरासत साथ हो तो तब बचें उपहास से।

कितना दिलकश हो सकेगा जिन्दगी का ये सफर,
आसमां में यों उड़े जैसे लगे खुशियों के पर,
ऊब, झुंझलाहट मिटे और अक्ल में हो ताजगी,
ये सभी सम्भव है बातें संग में पुस्तक अंगर।

आपसे अनुरोध है कि चन्द पन्ने नित पढ़ें,
ज्ञान की इन सीढ़ीयों पर नित्य प्रति ऐसे चढ़ें,
दीप है पुस्तक हमें जो रोशनी है दे रही,
इस चमकते दीप को तुम हाथ में लेकर बढ़े।

चाह हो मैं कुछ खरीदूं तो खरीदें पुस्तकें,
आपका निर्णय खरा कहते हैं जिसको सौ टके,
इस जहाँ में आदमी श्रम से थका है जा रहा,
पुस्तकें पढ़िये निरन्तर आप जब तन से थकें।

- ई-२०५, शास्त्री नगर, अजमेर, राज.

आर्यजगत् के समाचार

१. पुरोहितों की आवश्यकता- आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग (अचल मार्ग), अलीगढ़, उ.प्र. की मुख्य आर्य संस्था है। इस संस्था द्वारा वेद-प्रचार का कार्य सुचारू रूप से प्रारम्भ कर दिया गया है। वेदों एवं आर्यसमाज के नियमों एवं उनके उद्देश्यों को जन-जन में पहुँचाने हेतु चार शिक्षित एवं वेद-विद्वान् आर्य पुरोहितों की और आवश्यकता है। इनके अतिरिक्त एक अनुभवी ढ़ोलक वादक भी चाहिये। वेतन योग्यतानुसार एवं निवास की संस्था परिसर में व्यवस्था है।

सम्पर्क- ०९४१२६७१५५४, ०९५५७४०८५६५

२. अनेक कार्यक्रम- आर्यसमाज विज्ञान नगर, कोटा, राजस्थान ने स्कूली छात्र-छात्राओं को पाठ्य सामग्री बाँटी। अयप्पा मन्दिर कोटा को मलयालम भाषा का वैदिक साहित्य भेंट किया एवं वैदिक साहित्य की प्रदर्शनी भी लगाई। हजारों लोगों को नेत्रदान के लिये प्रेरित करने वाले डॉ. कुलवन्त गौड़ को आर्यसमाज ने सम्मानित किया। शारदीय नवसस्येष्टि पर्व दिपावली का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त वैदिक पूर्णिमा सत्सङ्ग समारोह पूर्वक मनाया जिसमें सैंकड़ों स्त्री-पुरुषों ने उत्साहपूर्वक यज्ञ में आहूतियाँ दी।

३. आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री सम्मानित- अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान्, ओजस्वी वक्ता, प्रख्यात लेखक, यशस्वी सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री को उनकी वैदिक धर्म प्रचार की सफल अमेरिका एवं कनाड़ा यात्रा की सम्पन्नता के पावन पर्व पर आर्यसमाज सैक्टर-७, रोहिणी, दिल्ली के विशाल सभागार में 'जय किशनदास सुनहरी देवी आर्या स्मृति ट्रस्ट' की ओर से शाल, कलात्मक स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र एवं मोतियों की माला भेंटकर 'संस्कृति गौरव सम्मान' से विभूषित किया गया।

४. आचार्या सूर्या देवी सम्मानित- गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कर के रजत जयन्ती वर्ष पर इलाहाबाद संग्रहालय में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया जिसमें वेद विदुषी आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा, पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी को २१०००/- का नकद, स्मृति चिह्न तथा अंग वस्त्र देकर पूर्व न्यायमूर्ति गिरधर मालवीय ने सम्मानित किया। यह पुरस्कार सूर्या देवी कृत **'ब्रह्मवेद है अथर्ववेद'** पर दिया गया। माननीय न्यायमूर्ति ने हर्ष प्रकट करते हुए उनकी विद्वता की भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा कि समिति द्वारा विद्वानों को सम्मानित करना वैदिक साहित्य के उन्नयन की दिशा में अत्यन्त उत्तम कार्य है।

वैवाहिक

५. वधू चाहिये- आर्यवन, रोजड़ और ऋषि उद्यान, अजमेर से जुड़े हुए युवक चिन्तन रामी, उम्र ३० साल, कद-५.९ फीट, वर्ण-गेहुंआँ, शिक्षा-एम.बी.ए., व्यापार-प्रॉपर्टी लेन-देन, निवास-जजेज बंगलो रोड, अहमदाबाद-३८००१५ (गुज.) के लिए आर्यसमाजी परिवार की, अध्यात्म में रुचि रखने वाली, वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार जीवन जीने की इच्छुक, घरेलू कन्या चाहिए।-**सम्पर्क-०९८२४९०८०८५**
ईमेल-chintan_success1@yahoo.co.in

गीत

- आचार्य ओमदेव

१. देश स्वतन्त्रता की जगा भावना, राष्ट्र प्रेम उरभर डाला।
स्वराज्य ही सर्वोत्तम होता, मन्त्र सभी को दे डाला।।
२. कर में ओ३म् पताका लेकर, जग कोने-कोने फहरा डाला।
वेद का अमृत सिंचन कर, वसुधा का कण-कण भर डाला।।
३. वेदों का सन्देश सुनाकर, सब मानव की मानवता का।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, सम्प्रदायों का खण्डन कर डाला।।
४. वसुधा है परिवार हमारा, इक ईश्वर की सब सन्तानें।
संस्कृति से संस्कार बने, वेद का चिन्तन कह डाला।।
५. लिखा अक्षर तेरा एक-एक, बना आसमान का ध्रुवतारा।
चमक रहा जो दूर-दूर तक, सत्यार्थप्रकाश एक ग्रन्थ निराला।।
६. दया के सागर दयानन्द, आनन्द का प्रेम बिखेर दिया।
विष देने वाले को भी, भेंट असर्फी कर डाला।।
७. गुरु के शिष्य हों तेरे जैसे, धरा धाम के उजियारे।
आर्यावर्त के धन्य पुत्र है! शत-शत प्रणाम तुझे कह डाला।।

- महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्य गुरुकुल, सोनाखार, छिन्दवाड़ा, म.प्र.-४८०००२

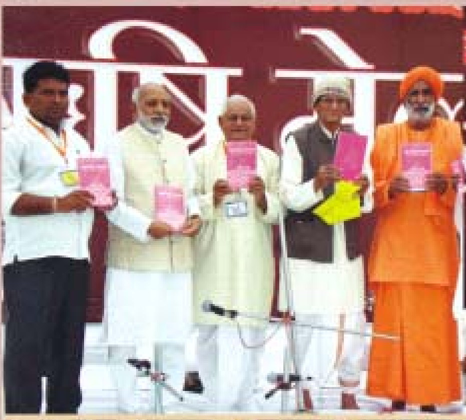

ऋषि मेले की झलकियाँ

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक प्रेषण : ३० नवम्बर, २०१४ ३९५९/५९

''हमारा इतिहास'' लघु नाटिका का मंचन करते हुए
महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान के ब्रह्मचारीगण।

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

डाक टिकिट